CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुँवारे शब्दों का द्वीप

(कहानियाँ)

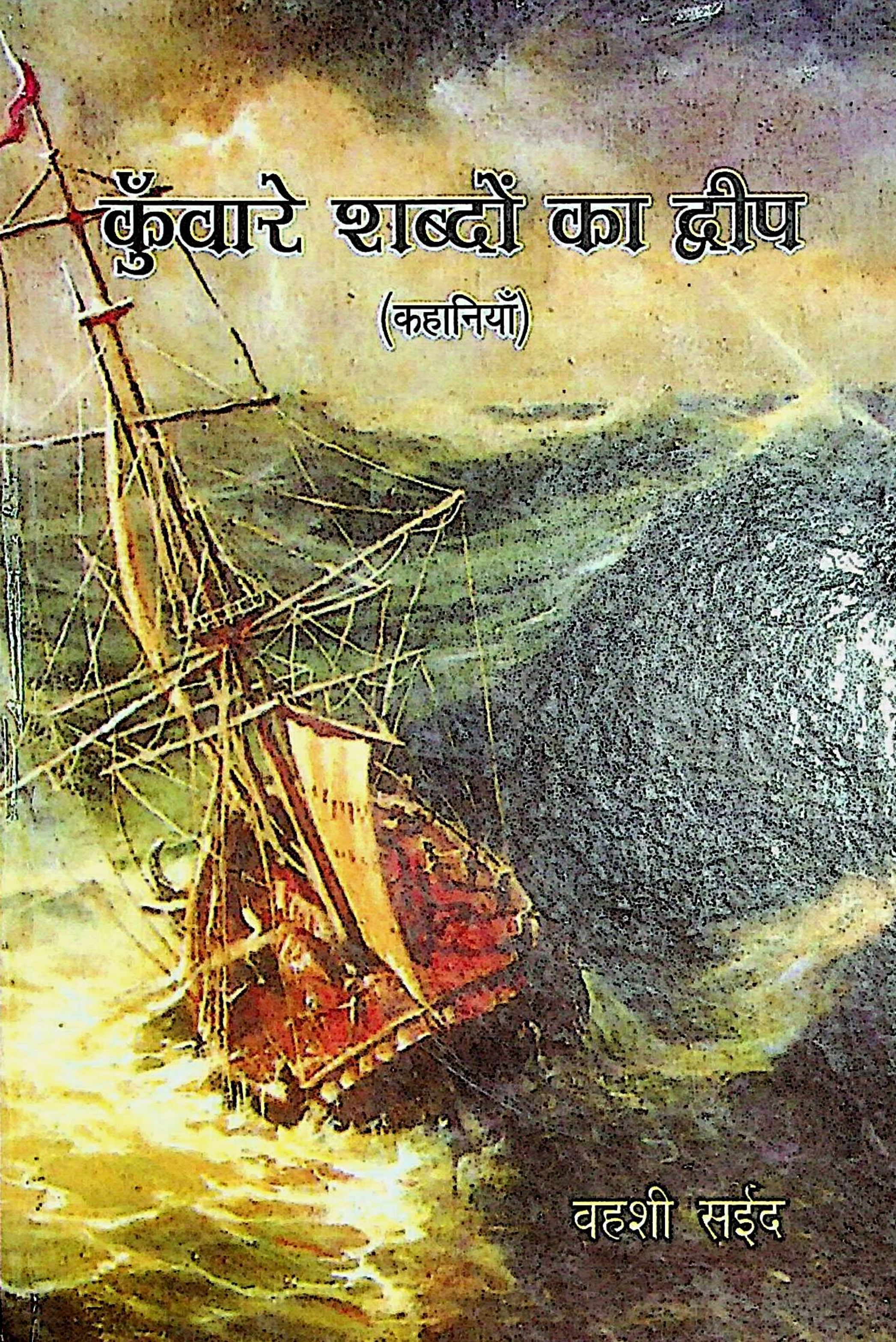

वहशी सईद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क़ुंवारे शब्दों का द्वीप

(उर्दू कहानियाँ)

लेखक
वहशी सईद

अनुवाद
जावेद अनवर

Kunware Shabdon Ka Dweep

Vehshi Syed

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वाधिकार सुरक्षित

पुस्तक का नाम : कुँवारे शब्दों का द्वीप (कहानियाँ)
संस्करण (प्रथम) : सितम्बर 2013
आवरण सज्जा : उज़्मा स्क्रीन, वाराणसी
अक्षर संयोजन : उज़्मा स्क्रीन, वाराणसी
मो0 0091–9369138837
मुद्रक : महावीर प्रेस, वाराणसी
मूल्य : 100 रुपये

प्रकाशन में सहयोग :
जावेद अनवर
सम्पादक : तहरीक–ए–अदब
उर्दू आशियाना
167 आफाक खान का अहाता
मंडुवाडीह बाज़ार, वाराणसी–221103

लेखक से सम्पर्क :
मोहम्मद सईद तरम्बू (वहशी सईद)
होटल शहंशाह पैलेस
बुलिवर्ड रोड, डल गेट, श्रीनगर–190001
जम्मू और कश्मीर
मोबाइल: 09419012800

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं जब भी तन्हा होता हूँ
तुम मेरे करीब होते हो

"ब" को समर्पित

वहशी सईद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

किश्कोल (भिक्षापात्र)	५
आबे हयात (अमृत)	११
मुट्ठी, उड़ान, आसमान	१६
आतिश बयान (उग्रवार्ताकार)	१६
तिलिस्मे कलाम (संवाद का जादू)	२१
पहचान	२४
खुदसरी (विद्रोह)	२५
गुमराही (पथभ्रष्टता)	२६
सुकूत दर सुकूत (शान्ति ही शान्ति)	२७
नया हुक्मरान (नया शासक)	३०
मन्फी का कायदा (हानि का नियम)	३३
इन्दराज (अंकित)	३८
इरतेका का सानेहा (प्रगति की घटना)	४१
आधे अधूरे	४८
किरचियों का सफर (टुकड़ों का सफर)	५१
अंधा कुआँ	५४
कहानी का आसेब (कहानी का भूत)	५७
बुत परस्त (मूर्ति पूजक)	६०
बड़ा दरवाज़ा	६३
सो गये दास्ताँ कहते कहते	६६
कुँवारे अल्फाज़ का जज़ीरा (कुँवारे शब्दों का द्वीप)	६६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किश्कोल (भिक्षापात्र)

अब भी रंगों में इन्द्रधनुषी लकीरें अपनी सारी चमक दमक लिए हुए उभरती हैं। वो इन्द्रधनुष से जब उभर जाती है तो खो जाती हैं और मैं चुपके से उसके कान में कह देता 'तुम इन्द्रधनुष हों।'

वो अपनी बड़ी बड़ी मोटी मोटी आँखों से खामोश रहने का हुक्म देती। वहीं आँखें जिनमें दुख दर्द की परछाईं दिखलाई पड़ती थीं। लेकिन उन आँखों ने मुझे अपनी हिरासत में ले लिया..... अब मैं स्वयं को व्याकुलता, बेचैनी और बेबसी के आलम में तड़पता हुआ महसूस करता। वो किताबी चेहरा अब भी आँखों के सामने है। जिस पर दो मोटी मोटी आँखें गम्भीरता और खामोशी की परछाइयाँ बन के रह गयी थीं। कसी कमर पर बालों की लम्बी चोटी। उसकी सेहतमंद पीठ और उसके कानों में चमकती और झूलती हुई बड़ी बड़ी जिप्सी बालियाँ।

दो साल बीत गये। दो साल पहले वो सबील के नाम शादी का लेबल लगाकर पत्थरों की दुनिया में आ गई। इस दुनिया का अजीब और बेहूदा सा नाम था। पत्थरों में पत्थर की जिन्दगी थी। वहाँ पत्थर के फूल थे। संवेदनहीन...... बगैर खुश्बू के और नजाकतों से अन्जान। वहाँ जीवन का फूल भी सूख सूख कर कांटा बन जाता था।

और यही इन्द्रधनुष की दुनिया थी।

वो अपनी खुश्बू खो रही थी..... वो जानती थी और यही एहसास जानलेवा था। काश एहसास भी मुर्दा हो जाता।

अनुक्रम रखने वाला सबील अनुक्रम को जीवन के लिए आवश्यक समझता था। कालेज की जवाँ फिज़ा ने हमारी दोस्ती को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिपक्व कर दिया था लेकिन सबील मेरे गैर अनुक्रमिक जीवन से समानता न बना सका। वो मकानों में रहता था। इंजीनियर बन गया। वो मेरी फाकामस्त जीवन को कोसता था। और मैं अपनी किस्मत पर नाज करता था।

वो ब्लूप्रिंट की लकीरों में खो गया। लकीरों की दुनिया लकीरों तक ही सिमट जाती है। सबील को उन लकीरों की नोक पलक सही करने से ही मतलब था। मकान गिर जाते थे बन जाते थे। ये तो जीवन का व्यापार था। वो मकानों को खड़ा करने वाला इंजीनियर था उनकी ऊँचाई और लम्बाई से ही मतलब रखता था।

इन्द्रधनुष लकीर नहीं थी..... मकान नहीं था। वो गुम हो गयी.... खो गयी.... उलझ गई।

इंसान इंसान होते हैं वो मकान नहीं होते। उनमें भावनायें होती है। दिल और ख्वाहिशें होती हैं। उनके मिज़ाज ईंट और पत्थर नहीं होते। सबील की दुनिया में पत्थर तोड़े जाते। गारे से सजाए जाते। अपनी दुनिया में अकेली अकेली इन्द्रधनुष.... अकेली थी। सबील की जिन्दगी एक नपा तुला पत्र थी.... वो लकीर का रखवाला नहीं था।

अपनी फाकामस्त जिन्दगी ने मुझे साहित्यकार बना दिया था। जो रंगों की दुनिया में रहता था। रंगों से प्यार करता था। रंगों से शब्दों की आकृति बनाता.... और समय..... समय अनोखा होता है।

समय ने मुझे क्या से क्या बना दिया। सोना बना दिया.... सोने से तौला। साहित्य से अच्छे पैसे मिले। मगर अपनी उलझी दुनिया उलझी ही रही। सुलझाने वाला जो नहीं मिला। मगर मैं कब इस उलझी हुई दुनिया से डरने वाला था। मुझे तो अपनी वहशत से प्यार था। लगाव था। फिर अचानक एक दिन मेरे हाथ एक पत्र लग गया।

ये ईंटों और पत्थरों की दुनिया से आया था। सबील ने मुझे इस दुनिया में कुछ दिनों के लिए आने को कहा था। मैं जानता था। वहाँ रंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे.... अच्छे भी.... बुरे भी। खूबसूरत और..... भद्दे। रंगों के इस अनुक्रम में नीलोफर ज़ाहिदा और फरीदा थीं। और सबील को उन रंगों को बिखेरने के लिए ब्रश चाहिए। मैं रंगों से तस्वीरों को क्रम देता हूँ। फिर ऐसे रंग जो छुए नहीं गये। परखे नहीं गये। जिनकी नज़ाकतों और दिल फरेबियों में कोई उलझा नहीं था। सबील की इन तीनों बहनों में से मुझे किसी का हाथ थाम लेना था.... मगर इन्द्रधनुष.... वो इन्द्र थी.... धनुष थी। उस तक पहुँचने के लिए लाखों मील का सुर तय करना पड़ेगा। इन्द्रधनुष के सामने उनकी नज़ाकत और अदायें मध्यम पड़ जाती थी। इसीलिए इन्द्रधनुष दिल में उतर गयी। मैंने चुपके से उसके कान में कहा 'तुम इन्द्रधनुष हो।'

वो खामोश रही। खामोशी उसका हथियार था। खामोशी ही उसकी नीति थी। मगर जिन्दगी खामोश नहीं थी। इसमें हलचल थी। भाग दौड़ थी। संघर्ष था। मगर वो कोरा कागज थी। मैंने चाहा.... बहुत चाहा.... वहाँ लकीरें खींच दूँ इतनी सारी लकीरें कि वो गिनते गिनते थक जाए और मैं लिखते लिखते रुक जाऊँ।

मगर उसका कोरा जवाब लक्ष्मण रेखा की भांति होता.... तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती। वो पत्थरों की दुनिया में रहती। जहाँ समझ भी मृतप्रायः हो जाती है। इस दुनिया में पत्थर लड़ते हैं। पत्थर तोड़े जाते हैं। मगर दिल.... दिल.... मांस का लोथड़ा है। कोई पत्थर का टुकड़ा नहीं। मैं उससे कहता रहा और समझता रहा कि भूतकाल की यादें या भविष्य के सपनों में खोये रहने से कहीं अच्छा है कि अपने वर्तमान का निर्माण करो.... मगर पत्थरों से सर तोड़े जाते हैं। जुनून ने कब पत्थर देखा। फुरसत की बात थी वरना फुरसत कहाँ.... पत्थरों को क्रमवार करते हुए खुद सबील पत्थर हो गया था और जब भी फुरसत पाता तो अपनी बातों का आरम्भ इस वाक्य के साथ निश्चित तौर पर करता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'तुम्हारी भाभी तुम्हारी बहुत प्रशंसा करती हैं।'

मैं केवल एक अनौपचारिक जवाब देता। शब्दों का क्रम न बदलता।

'मेरा सौभाग्य है।'

वो मुस्कुरा के कह देता.....

पत्थरों की दुनिया पसन्द आई?

मैं खो जाता, उलझ जाता, जीवन की गति भूल जाता मैं कह जाता....

'यहाँ सब पत्थर हैं'

वो ज़ोर का कहकहा लगाता.... इन्द्रधनुष उन कहकहों के बादलों में छुप जाया करती। इन्द्रधनुष पत्थर की मूर्ति थी। उसकी आत्मा को आज़ाद करना, उसमें हरारत भरना, जवानी का एहसास दिलाना। वहाँ रुह में जिस्म की तपिश की ज़रुरत थी। इनके ड्रामे रुप में किसी साधू के ये वाक्य बार बार मेरी निगाहों के सामने आये थे।

"उन लोगों को पवित्र नहीं कहा जा सकता जो अपने शरीर को धोकर साफ सुथरा कर लेते हैं.... वास्तविक रुप से पाक वो हैं जिनके दिल में ईश्वर का डर हो।"

ज़ाहिदा, नीलोफर और फरीदा के रंग फीके पड़ते रहे। ज़ाहिदा शायर थी। इसलिए उसके और मेरे बीच एक साहित्य का सम्बन्ध बना। वो मुझसे अपने शेरों की गलतियाँ ठीक कराती.... मगर मैं गलतियाँ ठीक करने की लक्ष्मण रेखा से आगे जाने को तैयार नहीं था। हालांकि इन्द्रधनुष आकर कहती।

"एक साहित्यकार की बीवी को एक शायर ही होना चाहिए...."

मैं उसको कुछ देर खामोश निगाहों से तकता और अपने प्रतिवाद पर काबू पाता जैसे बहुत दूर की यात्रा करके यात्री दम लेता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं साफ सुथरे शब्दों में अपना मकसद बयान कर देता।

"ये वाक्य मुझे पसन्द नहीं हैं।"

वो भोलेपन को अपना लेती। अंजान बन जाती और ये कह देती.....

"तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।"

मैं फिर उसको एहसास दिलाना चाहता। अपनी राह बताना चाहता।

"कभी कभी मैं भाग जाना चाहती हूँ मगर खुले हाथ याद आ जाते हैं।"

दामन छुड़ाने की कोशिश में उसकी जुबान पर सच्चाई आ जाती....

"इन पत्थरों में तुम्हारा कोई काम नहीं।"

"कोरे कागज पर शिकन पड़ जाती।"

फिर एक ऐसी शाम भी आई जो सुनसान भी थी। उस शाम मैं तारों भरे हुए आसमान के मनमोहक दृश्य और ग्रहों की आवागमन के प्राकृतिक वैभव से दूर अपनी नई कहानी में खो गया।

इस कहानी ने मुझे अपने हाथों का खिलौना बना दिया। लेकिन इस काल्पनिक दुनिया में मैं ज़्यादा न भटक सका। किसी ने दरवाजा खटखटाया.... वो इन्द्रधनुष थी।

मैं ने दबी दबी आवाज़ में कहा।

'तुम हो इन्द्र।'

'हाँ मैं हूँ।' उसने कहा।

वो खामोशी से कुर्सी पर बैठी। उसके आने से मेरे मस्तिष्क में अंधेरा बढ़ गया। जब तक वो परदा न उठाती। रोशरी न होती.... मैंने मजबूरन कहा।

'क्या बात है?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके चेहरे पर थकन थी जैसे वो लाखों मील का सफर तय करके आयी हो। लेकिन उसके चेहरे पर बेचैनी की कोई झलक न थी। उसने दुख भरी आवाज़ में कहा।

'पत्थरों की दुनिया ने मुझे पत्थर बना दिया है।'

मैं थोड़ी देर के लिए अपनी हैरत पर काबू न रख सका। जुनून की आग मेरे रोम रोम से लहराते हुए दिमाग पर असर कर गई। मैंने कहा।

'तुम्हें एहसास हुआ।'

वो खामोश रही। खामोशी बड़ी दुख भरी थी।

'वो खड़ी हुई.... कमरे में टहलती रही.... दायें हाथ से वो अपने बालों को संवारती.... कभी अपने माथे के पसीने की बूँदों को रुमाल से पोंछती.... अचानक वहशतज़दा आवाज़ में बोली।

चले जाओ.... पत्थरों की इस दुनिया से चले जाओ.... मैं पत्थर रहना चाहती हूँ। केवल पत्थर रहना चाहती हूँ।

कितनी ही मूर्तियाँ टूटीं। कितनी कल्पनायें चूर चूर हुईं.... मैं दौड़ा.... मैं भागा.... पत्थरों की दुनिया से वापस ज़रुर आया था लेकिन पत्थर न बन सका।

'दिल का दर्द रोग बन गया!!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आब-ए-हयात (अमृत)

नवाब गयासुद्दीन बेग के पास बहुत धन तो न था लेकिन अब तक उनके पास एक प्राचीन खानदानी पुस्तकालय था जिसमें पुस्तकों की कुछ अनमोल प्रतियाँ थीं। नवाब बूढ़े हो गये थे और कमज़ोर भी। उनका अक्सर समय पुस्तकालय में ही व्यतीत होता। नवाब प्राचीन अमूल्य प्रतियों में से कुछ न कुछ पाने की खोज में लगे रहते। नवाब साहब के दो दोस्त थे। एक मीर अली जो अधेड़ उम्र के खानदानी दौलतमंद थे और दौलत खर्च करना भी जानते थे। दूसरा दोस्त एक नौजवान था। पुस्तकों के अध्ययन के शौक ने उसको नवाब गयासुद्दीन के करीब कर दिया था।

एक दिन की बात है नवाब गयासुद्दीन बेग बड़े जोशीले अन्दाज़ में पुस्तकालय के एक सिरे से दूसरे सिरे का चक्कर काट रह थे। ये क्रम बहुत देर तक चलता रहा। नौकर ये समझने पर मजबूर हो गये कि शायद नवाब साहब की ये मजनूनाना हरकत अपनी स्वर्गीय पत्नी की याद से पैदा होने वाली बेचैनी का नतीजा है। लेकिन वो अपने दोस्तों की प्रतीक्षा कर रहे थे। अमरत्व पाने के लिए एक प्राचीन नुस्खा उनके हाथ लग गया था। जब दोस्त आ गये तब उनकी बेचैनी कुछ कम हुई। वो तीनों नुस्खे के बारे में बड़ी गोपनीयता से बातें करने लगे। तीनों के दिलों में अमरत्व प्राप्ती की उमंगे हिलोरे ले रही थीं। अब तक तीनों ये समझते आये थे कि अमृत केवल गाथाओं और कहानियों में प्रयोग होने वाला एक शब्दमात्र है लेकिन आज उन्हें मालूम हुआ कि इसका कोई अस्तित्व भी है, कोई हकीकत भी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन तीनों के बीच ये तय हुआ कि अमृत पाने के लिए वो कार्य करें जिसके बारे में प्राचीन नुस्खे में लिखा था। इस कार्य का आरम्भ समुद्र के रास्ते से होना था। इसलिए फौरन ही एक समुद्री जहाज़ का जो वैज्ञानिक उपकरणों से लैस था, प्रबन्ध किया गया। इसका पूरा व्यय मीर अली ने सहन किया।

अमृत पाने के इस कार्य को गोपनीय रखना अति आवश्यक था। इसलिए कोई सहायक जहाज़ और कर्मचारी साथ नहीं लिए गये। और वो तीनों अकेले ही चुपचाप समुद्र की अथाह दुनिया में चले गये।

प्राचीन नुस्खे के मुताबिक इस कार्य का पहला पड़ाव समुद्र में वो द्वीप था जो सदैव लहरों में डूबा रहता था। वो डेढ़ महीनों तक समुद्री पानी के बदलते हुए रंगों के बीच वो द्वीप तलाश करने की कोशिश करते रहे। लेकिन द्वीप उनकी निगाहों से ओझल रहा। वो तीनों मायूस होने लगे। एक दिन नवाब गयासुद्दीन बेग ने कहा:

'वो नुस्खा झूठा होगा। चलो वापस लौट चलें।'

लेकिन उनके नुस्खे की सच्चाई को साबित करने के लिए प्रकृति ने जहाज़ की दिशा उस तरफ कर दी जिधर लहरों में डूबा हुआ द्वीप था। अहमद तो चीख ही पड़ा।

'द्वीप मिल गया..... द्वीप।'

वो तीनों एक दूसरे को हैरत से तकने लगे। तीनों द्वीप पर उतरे। उसकी ज़मीन पथरीली थी। लहरों में डूबे हुए द्वीप पर छन छन कर सूर्य की किरणें आ रही थीं जिससे ज़मीन गर्म थी। वो तीनों नंगे पांव गर्म पत्थरों के रास्ते तय करते रहे। पूर्णतयः खामोशी मे डूबे इस द्वीप पर किसी पक्षी का चहचहा था न किसी पशु का अस्तित्व। और मनुष्य का तो सवाल ही नहीं था। उनके पांव में छाले पड़ गये लेकिन वो चलते रहे। ऐसा लगता था कि फूलों के रास्ते पर स्वर्ग की अप्सरायें उन पर पुष्पवर्षा कर रही हों। रास्ते की मुसीबतें गंतव्य की राहत के सामने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या अहमियत रखती हैं। वो चलते रहे। प्राचीन नुस्खे के मुताबिक 'अमृत' पाने का दूसरा पड़ाव गुफा का द्वार था जो उन्हें अब तक नज़र नहीं आया था। अहमद ने उनको एक टीले पर बैठ जाने का इशारा किया। फिर तीनों भोजन करने बैठ गये। भोजन करते रहे और भविष्य के सुनहरे झूले में झूलते रहे।

भोजन के बाद.... यात्रा फिर आरम्भ हुई।

सूरज डूब गया। अंधेरे ने द्वीप को अपने आंचल में छुपा लिया। अब वो एक दूसरे को देख भी नहीं सकते थे लेकिन अमृत पाने की लालसा हर मुसीबत पर काबू पाती रही। अंततः वो एक टीले पर बैठ गये और अपनी यात्रा के दूसरे पड़ाव की असफलता का रोना रोते रहे। किसी ने उनके कानों में कहा।

'जाओ सामने वो लाल पत्थर है। उसको हटा दो।'

वो तीनों एक साथ दौड़ पड़े और अपनी पूरी शक्ति इंकट्ठा करके लाल पत्थर को हटाने लगे। उनकी बाहें फौलादी हो गयीं। न जाने उनमें शक्ति कहाँ से आ गयी थी।

अहमद ने सबसे पहले गुफा में प्रवेश किया। गुफा में बिल्कुल अंधेरा था। उसकी छत से पानी की बूंदे ऐसी गिरती थी जैसे आकाश से हल्की बूंदा बांदी हो रही हो। वो तीनों एक दूसरे के हाथ में हाथ देकर अगले पड़ाव की ओर बढ़ रहे थे। इस दूसरे पड़ाव के दौरान वो ऐसा महसूस कर रहे थे कि जैसे उनके शरीर का सारा लहू निचोड़ लिया गया हो। वो केवल हड्डियों का ढांचा मात्र हों। खामोशी और भय से भरे इस माहौल में 'अमृत' का ख्याल अब भी एक दिल फरेब हसीना की तरह उनके दिलो दिमाग पर छाया हुआ था।

न जाने कितने दिनों तक वो चलते रहे। समय का हिसाब और उसका एहसास कभी का खत्म हो गया था। कभी कभी ये ख्याल भी ज़ोर पकड़ता कि क्यों न वापस लौट चलें। लेकिन वापस लौटना भी अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरल न था।

अचानक गुफा में बिजली चमकी। क्षण भर का ये प्रकाश भी जैसे सवाल बन गया। आखिर तुम लोगों को अमृत क्यों चाहिए। नवाब गयासुद्दीन सोचता रहा। उसके पास अमीरी के ठाट बाट तो नहीं थे लेकिन वो भीख मंगा भी नहीं है। अब भी मुश्तरी बाई का गाना सुनने जाता है और उसके साथ दिन रात गुज़रते हैं। फिर ऐसी ऐश वाली जिन्दगी से भागना क्यों। और ऐसी गुफा में 'अमृत' की खोज में मारा मारा फिरना क्यों?

'जिन्दगी के हसीन पहलुओं को और भी हसीन बनाया जा सकता है जबकि जिन्दगी अमर हो।' इस ख्याल ने उन्हें फिर निश्चित कर दिया।

मीर अली के पास अकूत दौलत थी। और दौलत से जीवन की कौन सी वस्तु वो नहीं खरीद सकता था लेकिन 'अमृत' का कोई मूल्य नहीं। अगर ये पाने का अवसर उसे मिले तो उसे गंवाए क्यों।

अहमद जवान था। जीवन के उतार चढ़ाव से अनभिज्ञ लेकिन संघर्षशील। उसने सोचा अगर अमृत मिले तो अच्छा। नहीं मिले तो क्या हुआ। एक संघर्ष से मज़ा उठायेंगे।

बिजली की चमक ने उनके हौसले बढ़ा दिये। अचानक मीर अली ने तेज़ अवाज़ में कहा। मिल गया मिल गया। दरवाज़ा मिल गया।

वो तीनों खुशी के मारे एक दूसरे से लिपट गये, नाचने लगे। प्रसन्नता से युक्त नृत्य और आवाज़ों ने गुफा की शान्ति को उथल पुथल कर दिया।

वो नाचते नाचते बेसुध होकर दरवाज़े के पास गिर गये। सोने का दरवाज़ा खुद ब खुद खुल गया। खुश्बू में डूबी हुई हवा का एक झोंका उनके नथुनों में घुल कर उनके शरीर को ताज़ा करने लगा। तीनों में शक्ति वापस आ गई। वो खड़े हो गये और दरवाज़े के अन्दर प्रवेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर गये।

यात्रा का तीसरा पड़ाव बहुत ही दिलचस्प और आश्चर्यचकित कर देने वाला रहा। वहाँ सब कुछ मौजूद था जिसका वर्णन प्राचीन नुस्खे में किया गया था। हरे भरे बाग बहुत दूर तक फैले हुए थे। इन तीनों की निगाहें बाग का आखरी सिरा पाने में नाकाम रहीं। वहाँ झरने थे। अच्छे रंगों वाले पक्षी थे जिनकी चहचहाहट एक मनमोहक कौतूहल पैदा कर रही थी। सारा माहौल प्रेम से अभिभूत था। अप्सरायें कतार बांध कर उन तीनों के आस पास खड़ी हो गयीं। उन पर रंग बिरंगे फूलों की वर्षा होने लगी। वो स्वयं को उस माहौल में अजनबी महसूस कर रहे थे। उन्हें आभास हुआ कि कोई मीठी-धीमी आवाज़ उनके कानों में कह रही हो।

स्वागत है.... स्वागत है। अमृत की खोज करने वालों तुम्हारा स्वागत है।

वो तीनों अप्सराओं की कतार तोड़ते हुए उस तरफ दौड़ने लगे जहाँ मोतियों के तालाब में 'अमृत' हिचकोले खा रहा था। वो तीनों अमृत के तालाब से अपनी प्यास बुझाते रहे जब वो इस कार्य से खाली हुए तो अपना सर उठा कर चलने लगे। अब उनके पास अमृत था। सदैव के लिए.... वो अमर मनुष्य बन गये थे।

वो एक दूसरे से कहने लगे कि मृत्यु अब उनके लिए एक सपना है। जिस प्रकार कल उनके लिए एक सपना था। वो अब सफल होकर अपनी दुनिया में वापस लौट रहे हैं।

एक सफेद पक्षी उड़ता हुआ आया और कुछ अखबार की प्रतियाँ उनके सामने गिरा दीं। उन तीनों ने वो प्रतियाँ उठा ली। अखबारों के मुखपृष्ठ पर मुगलसराय के निकट एक भयानक ट्रेन दुर्घटना की खबर छपी हुई थी और मरने वालों की सूची में उन तीनों के नाम भी थे। खबर पढ़ कर वो तीनों हैरत से एक दूसरे को तकने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुट्ठी.... उड़ान.... आसमान

मुझे ये मालूम नहीं कि मुझ पर ये सच्चाई कब खुल गयी कि मेरी छवि आईने में नज़र नहीं आ रही है। ऐसा समय जीवन का हौसला ज़रुर तोड़ने वाले होते हैं। हमारा काबू कब और कहाँ तक रह सकता है.....?

मैं फैलते फैलते इतना फैल गया कि परिचय ने अपना अर्थ बदल दिया। मैं शहर की सबसे ऊँची इमारत के सबसे ऊँचे तल के अन्दर झांकने लगा। मेरा बच्चा मुझे देखकर अपनी माँ से चीख चीख कर कहने लगा....

"मम्मी.... मम्मी.... डैडी भूत बन गये।"

ये परिचय पर पहला शक्तिशाली वार था। लेकिन ये एहसास अपनी जगह अमिट सच्चाई के रुप में परिवर्तित होने लगा कि मैं अपनी कल्पना से बहुत आगे निकल चुका हूँ। कद के ऊँचे होने पर संभल संभल कर चलने की योग्यता मुझसे छीन ली गई... कब और कैसे बुद्धिमत्ता की लोहे जैसी दीवार टूट गयी इसके बारे में मुझे हल्का सा इशारा भी नहीं हुआ। मेरे पांव के नीचे आई हुई भिखारन चीखी तो ज़रुर होगी। लेकिन इतने ऊँचे कद पर सुनाई कैसे देता। ये तो दूसरी बात है कि जब भूँचाल आता है तो कितनी ही ऊँची ऊँची चोटियाँ अपना सर झुका देती हैं। वो भी एक भूँचाल था जिसने मेरी छीन ली गई सुनने की शक्ति मुझे वापस की।

"कमीना!.... पाजी!.... ज़लील!!!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वो मेरे भागते कदमों के साथ अपने कदम मिलाती रही। भिखारन का कमज़ोर मरियल शरीर जुनून का मुख्य पात्र बना। ये कहाँ की बहादुरी थी कि भीड़ के सामने मैं सीना तान कर खड़ा होता। इतिहास ने ऐसे पात्रों के साथ कैसा सुलूक किया क्या वो ढ़की छिपी बात है?

कितने ही कटे हुए शरीरों को स्वर्ण पदक पुरस्कार स्वरुप दिये गये। लेकिन वो हालात ने अमर बनाए था शौक ने। इसलिए मैंने एक फैले हुए हरे भरे मैदान में अपने लिए एक सुरक्षित जगह बनाई। लेकिन मैदान में दरवाज़ा कैसा....?

फिर भी मैंने दरवाज़ा बन्द किया। और अपने आपको महफ़ूज़ समझने लगा। जल्लाद की तलवार जब चलती है तो किसको मालूम कहाँ जाकर लगेगी। मैदान तो मैदान है कब तक मैं सुरक्षित रहता। वो थूकते रहे और मैं स्वयं को बचाता रहा। फिर जब वो थक गये और मेरी मासूमियत पर मर मिटने को राज़ी हो गये तो मैं समझा कि मेरा सब कुछ धुल गया। मैं अपनी सुरक्षित जगह से बाहर आया जैसे शेर गुफा से। लेकिन मासूमियत में जादूगरी की प्रतिमा घुलमिल गई। जादूगरी, चालाकी, मक्कारी अब तो मेरे घर के सेवक बन कर रह गये। वो मेरी हरकतों को किसी की तबाही या किसी की भलाई समझने लगे। और अब जब मैं महात्मा समझा गया तो आश्रमों और मठों का निर्माण किया जाने लगा।

कुछ भ्रम तो रखना ही होगा। इसलिए मुरीदों को कब मैं मायूस करने वाला था। मेरा कद जो पहले ही ऊँचा था। और ऊँचा होता गया। ये अब मेरे लिए ज़रुरी हो गया कि मैं अपने अनुयाइयों को अपने उच्च विचारों से अवगत कराऊँ। बहुत से उच्च विचार बहुत पुराने थे लेकिन हर पुरानी चीज़ का नशा दोगुना होता है। मैंने उनसे कहा।

'आप स्वयं को परखना चाहते हो तो अपने ही शरीर के छोटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटे टुकड़े करो। बैठे बिठाये बहरुप से मुक्ति कौन चाहता है।'

नुकसान पर फायदा हमेशा भारी लगता है। फिर न जाने कहाँ से स्वाभिमान आया। पहले मुझे गले लगाया। मेरी प्रशंसा में धरती आकाश एक कर दिये। फिर जाते जाते नाम अपने गले से उतार के मेरी गर्दन में पहना दिया। मैंने लाख चाहा कि उससे कहूँ क्यों भाई? इस बोझ से मेरी गर्दन थक जाएगी.....

लेकिन.... मेरी ज़ुबान ने मेरा साथ नहीं दिया। उस नाग ने मुझे अपने काबू में इस प्रकार जकड़ लिया जैसे किसी ने मुझे बेहोश कर देने वाली शराब में नहला दिया हो। बेहोशी की इस अवस्था से छुटकारे का रास्ता नज़र न आता था। नाग मुझसे ज़्यादा चतुर था। मैं छुटकारे के रास्तों को चुनता रहा और वो अपने ऊपर मेरा खून मलता रहा।

फिर न जाने मुझमें संघर्ष की भावना कैसे घर कर गयी कि मैंने नाग से अपनी गर्दन आज़ाद कराने के लिए अपने फौलादी हाथों में उसका शरीर दबोचा। लेकिन उसने अपने शरीर की मजबूती को काम में लाते हुए मेरी गर्दन दबोचनी शुरु की। मुझे अपनी सांस रुकती हुई महसूस हुई। मेरे हाथों से ताकत छीन ली गयी। मैं हार गया। लेकिन मेरा हाथ खुल गया.... था.... मेरी मुट्ठी खुल गयी.... अब तो उड़ान थी। उड़ान की कोई सरहद नहीं होती। ऊपर उड़ने वाले आकाश को अपनी दिशा बनाते हैं। आज मुझे मालूम हुआ कि आईना भी झूठा है। आईना कब किसी को पहचान पाया कि अब मुझे पहचान पाता।

अभी एक.... ब्रह्म.... ओमू.... का शब्द मिला.... वर्ना आईना कब का टूट गया होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आतिश बयान (उग्र वार्ताकार)

जब हम सोचते रहते थे कि अगर ऐसा हुआ तो क्या होगा...?

वर्षों से ये 'क्या' हमारे दिमागों में भय के बोझ तले दबा रहा।

और फिर उस 'क्या' का सफर उस शाम शुरु हुआ जब हमारे इस छोटे से शहर को काली आंधी ने अपने काबू में जकड़ लिया।

सुबह की पहली किरण के साथ साथ नागों के शरीरों पर लोगों की भीड़ उभर आई। उस बड़े मैदान में जहाँ आवाज़ों की चित्कार अब भी सुनाई देती है। उस उग्र वार्ताकार ने कहा।

जब अंदेशे बाहर से हों तो दिमाग परेशानियों का घर बन जाता है। जब भय बाहर से हो तो डर दिल में पैदा होता है। भय और अंदेशे हमारी सदियों पुरानी गुलामी की देन है। जब तक स्वयं के विश्वास से अपने आप को दूर रखेंगे तब तक ये भय और अंदेशे हम पर हावी होते रहेंगे।

क्या वो उग्र वार्ताकार अब थक गया? लेकिन हम उस रात सो न सके। और फिर 'क्या' का आखरी सफर शुरु हुआ। हम कंधे से कंधा मिलाते हुए आगे बढ़ते रहे। साथ चलते रहे। जब सूर्य की किरणे डल झील के साफ पानी में उतर गई तो अज़ान देने वाले की आवाज़ सुनाई दी।

'अल्लाहु अकबर'

हमने आखरी मुट्ठी खाक भी उन पर डाल दी। अब विचारों की झील बार बार हमसे सवाल करती रही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अब वो उग्रवार्ताकार कहा।"
हम अंधेरे में एक दूसरे को हौसला देते रहे और कहते रहे....
'वो साधु मनुष्य लौट आयेगा।'
लेकिन विचारों ने फिर हमें 'क्या' के हवाले कर दिया....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलिस्मे कलाम (संवाद का जादू)

वो शहर जहाँ सीमेंट और लोहे के बने हुए पिंजरे आसमान को छू रहे हैं।

वो शहर जहाँ चिमनियों से निकला हुआ काला धुँआ सीनों में दफन हो जाता है।

वो शहर जहाँ रात दिन के पहलू में दम तोड़ती है....!!!

उस शहर में मृत्यु जीवन से भाग कर समुद्र की तहों में गुम हो जाती है। उस अजनबी शहर में हम सौदागर बन कर आये। बहुत दिनों तक उस शहर के गली मुहल्लों की खाक छानते रहे। फिर हम उस शहर से हिजरत (पलायन) के लिए बिस्तर बांधे खड़े थे कि खिज़र (भटको को रास्ता बताने वाले ईश्वर के दूत) मिले। वो कहने लगे। कहानियों के सौदागर! हमारे इस शहर में.....!

सौदागर हूँ, हूज़ूर सौदागर....!

तिलिस्मे होशरुबा (जादुई कहानियाँ)

खूब! नाम तुम्हारा, काम हमारा!

लेकिन.... हम विरोध स्वरुप बोल पड़े।

'फाके (भोजन न मिलना).... सौदागर.... फाके....'

हम खामोश हो रहे।

तिलिस्मे होशरुबा (जादूई कहानियाँ) के पहले पृष्ठ पर विभिन्न प्रकार के वाक्यों का उल्लेख था।

दूसरे पृष्ठ में समुद्र के किनारे खूबसूरत बंगला। गेट के सामने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बड़ी गाड़ी.... और न जाने क्या.... क्या!!!

तीसरे पृष्ठ पर खूबसूरत युवती अपने कोमल हाथों में खूबसूरत प्याले में शराब लिए खड़ी थी।

हम तो केवल तिलिस्मे होशरुबा के उन पृष्ठों को समझने की कोशिश करते रहे।

एक दिन खिज़र ने पुकारा....

तिलिस्म (जादू) हमारी नयी हिरोईन।

लेकिन मैं तो केवल....

मुआवज़ा सही होगा।

तिलिस्मे होशरुबा ने कहा।

संवाद....!!

खूब..... बहुत खूब!! खिज़र खुशी से उछल पड़े.....

फिर हम संवाद से मिले।

वो संवाद जो हमारे दिल के उस खाने में रहती थी जिसका दरवाज़ा हमने बन्द किया था। वो मेरे उस शहर की थी जहाँ हमने हर दरगाह पर अपना सर टिका दिया था।

तब न वो संवाद थी और न तिलिस्मे होशरुबा। मैं केवल कालेज के चपरासी का बेटा था और..... वह कालेज के लेक्चरार की बेटी।

बहुत दिनों तक हम लेक्चरार' और चपरासी की कशमकश में डूबते रहे और उभरते रहे। फिर चपरासी की जीविका पर जब खतरा मंडराने लगा, हमने उस शहर को अलविदा कह दिया।

अब ये लेक्चरार की बेटी इन पत्थरों में क्यों?

हम बहुत दिनों तक एक दूसरे के लिए अजनबी न रहे। न मैं अपने वादे पर अटल रहा और न वो लेक्चरार की आज्ञाकारी रही।

ये सब देखकर लेक्चरार आपे में न रहे। लेकिन सूर्य समुद्र में उतर चुका था। वो सम्बन्धों को टुकड़े टुकड़े करके अपने शहर वापस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चला गया। यही हालत कुछ खिज़र की भी थी। जिसने संवाद को अपनी कहानी के लिए अयोग्य करार दिया। और मुझे भी अपने क्रोध का शिकार बनाया।

लेकिन संवाद मुझमें और मैं संवाद में स्वयं की खोज करते रहे.... तन्हाई.... अलबत्ता ये खुशी ज़्यादा दिनों तक न रही।

तिलिस्मे होशरुबा के दूसरे पृष्ठ के साथ साथ अब पहला पृष्ठ भी बन्द हो गया। इस अचानक आफत से छुटकारा मुश्किल नज़र आ रहा था। मैंने लाख जतन किये कि तिलिस्मे होशरुबा के पृष्ठ फिर से खुल जायें लेकिन असफलता ने साथ न छोड़ा।

और एक बार फिर खिज़र के दरवाज़े पर जा खड़ा हुआ।

खिज़र ने मुस्कुराते हुए कहा।

तिलिस्म! तुम मेरे अज़ीज़ हो। संवाद को हिरोईन बनाकर जो खतरा हम मोल ले रहे हैं उसके लिए मुआवज़ा ज़रुरी है।

संवाद और मैं बहुत रात तक जागते रहे.... फिर मेरी आँख कब लग गयी.... कि तिलिस्मे होशरुबा के सारे के सारे पृष्ठ मेरे सामने बिखरे पड़े थे.... लेकिन तिलिस्म से संवाद टूट गयी थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहचान

वो अपने स्वाभिमान के सामने अपने मिज़ाज के विद्रोह को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। ये कशमकश उसके व्यक्तित्व के लिए बहुत कड़वी और दुख भरी थी। अब सम्पर्क के साथ ये आभास भी हावी होने लगा कि अपनी जीवन भर की पूंजी की सबसे हसीन मूरत वो स्वयं ढ़ाने पर तुला हुआ है। उस क्षण उसने अपने दिल को भाले की नोक पर महसूस किया।

वो टूटता रहा।

धीरे धीरे समर्पण की भावना उस पर हावी होने लगी। वो जब अपनी मूरत को छूने लगा, मूरत ने कहा।

'तुम कौन?'

'मैं यूसुफ!'

उसने बहुत धीरे से मूरत के कान में कहा....

'तुम यूसुफ नहीं हो....!'

और यूसुफ बेबसी से रात के सन्नाटे में अपने वजूद की पहचान को गुमनामी के अंधेरे में खोते हुए देख रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुदसरी (विद्रोह)

वो रात लम्बी और कष्टपूर्ण थी। अहंकार के झुरमुट में जीवन के क्षणों को जब उसने दम तोड़ते देखा तो भयभीत हो गया। कहीं किसी अद्‌भुत किंवदंती की परिपूर्णता के लिए भयानक अंदेशे भी जीवन के साझीदार बनते हैं। वो देर तक अपने दिल को आने वाली दिल लुभावनी आशाओं से बहलाता रहा। अचानक किसी ने उसे मीठे सपने से जगाया। वो सफेद गाउन पहने कद्‌दावर व्यक्ति अपनी मज़बूत आवाज़ में कहने लगा।

क्या ये ज़रूरी है कि तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे लिए लाभदायक साबित हो..... लेकिन

कद्‌दावर व्यक्ति ने आगे कहा।

"किंवदंती बनना तो दूर की बात है अब तो बनाने वाला भी टूट गया।"

वो अंदेशे जो अब तक सच्चाई से दूर थे। उसने अपने विद्रोह से उनमें जान डाल दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुमराही

जब उसने अपने पांव रेशमी मुलायम कालीनों पर रखे तो यूँ महसूस हुआ कि स्वर्ग का पहला निशान मिला।

वो संगमरमर के आलीशान महल में अपने भूत और वर्तमान की अनगिनत उलझनों को याद करने लगा। जिनसे वो छुटकारा पाने के लिए जतन कर रहा था।

अतलस और कमख्वाब जैसे कीमती कपड़ों से सजे हुए फर्नीचर विल्लौर के फानूस, चांदी के बर्तन..... जब ये सब उसकी निगाहों में आ गये तो उसे अपने भविष्य के भयानक अंधेरे और भी गहरे होते हुए नज़र आने लगे।

राजा की कुर्सी पर विराजमान अपने गले में पड़े हुए नेकलेस से खेलते हुए कहने लगा। ये सब हासिल करने के लिए भाग दौड़ की ज़रुरत नहीं है। अलबत्ता अपनी.... आँखों को स्वयं ही देखने की शक्ति से विरक्त करना होगा।

लेकिन.... वो बेबस आवाज़ में बोल पड़ा।

"विचार प्रगति के लिए ज़िद पर अड़ा है।"

वो व्यक्ति खड़ा हुआ और अपनी लोहे की अलमारी में उसकी देखने की शक्ति को बन्द कर दिया। अब वो अंधा आदमी अपनी गुमराही पर आँसू भी नहीं बहा सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुकूत दर सुकूत (शान्ति ही शान्ति)

जिस यात्रा का अंत हुआ हो, उसके बारे में बात करना व्यर्थ है। लेकिन व्यक्ति गलतफहमी की ज़ंजीर अपने गले में लटकाए रखता है और ये समझता है कि ज्ञान की खिड़कियाँ उस पर खुलने को हैं। फिर ये भी मान लेता है कि यात्रा के अंत के बाद नयी यात्रा का आरम्भ होता है।

वो ईरान से भागा हुआ रुस्तमे ज़माना था जिसने हमारे यहाँ पनाह ली थी। जब हम छोटे थे तो उसके कंधों पर चढ़ कर सारी दुनिया घूम आने की तरकीबें बनाया करते थे। वो थक नहीं सकता था क्योंकि वो रुस्तमे ज़माना था। हम हंसी उड़ाया करते थे और वो बुरा मान जाता पर.....

लेकिन वो हमारे साथ बहुत दिनों तक नहीं रहा। क्योंकि बच्चे बच्चे न रहे। अब हमें भी याद आ गया कि खलील जिब्रान ने कहा था कि ज़मीन पर सोने वाले भी वो सपने चुरा लेते हैं जिन पर अतलस और कमख्वाब जैसे कीमती कपड़ों के बने हुए बिस्तरों पर सोने वाले अपना अधिकार समझते हैं। शायद ये मेरा अपना वाक्य है। या शायद खलील जिब्रान से उधार लिया..... और कुछ अपना जोड़ लिया।

ढलती हुई उम्र में आदमी का अपना साया भी घटता जाता है। साया जिसके लम्बा होने पर आदमी गुमान के विद्रोह के जाल में उलझ जाता है।

अब आइए। ज़रा अपने सिन्दबाद जहाज़ी का अफसाना शुरु करें। हुआ यूँ कि जो सवाल उसकी निगाहों के सामने उभरा। उससे वो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चकरा के रह गया। वो गांव का था जिसका प्रेम, मासूमियत और इंसानियत कीचड़ में खिले हुए कमल की तरह उजली थी।

सवाल?

डर, खौफ, भय।

लेकिन अब उसे कौन समझाता कि इस सवाल का जवाब यूँ था।

हरा..... पीला..... लाल।

हर चौराहे पर वो न जाने कितनी बार उन रंगों में डूबा और उभरा। हिचकी भी कोई छिपाने की चीज़ है? और फिर हिचकियाँ खास शोहरत का बहाना बन जाती हैं।

'मैं तुम्हारा घोड़ा हूँ.... तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ....

वो मेरे चार साल के बच्चे से कहता और फिर मेरा बच्चा कहता।

'चल मेरे घोड़े, दौड़ मेरे घोड़े। क्या थक गये तुम मेरे घोड़े... दौड़ते रहे, दौड़ते रहो।"

छः घंटे पहले वो एक्सरे मशीन के सामने खुद ही खड़ा हुआ था। मैं पहले एक्सरे को हाथ में लेकर सड़कों, गाड़ियों, हैवानों, इंसानों और स्वयं के बीच गुज़रते हुए डाक्टर के पास हांफते हुए पहुँचा। गीला एक्सरे फोटो मेरे हाथ से गिरकर डाक्टर के कदमों पर जा पड़ा।

हइया लस्सलात हइया लस्सलात (नमाज़ पढ़ने आओ, नमाज़ पढ़ने आओ)

हइया ललफलाह अइया ललफलाह (निजात पाने आओ, निजात पाने आओ)

कल जो किताब मैंने शुरु की थी, वो आज खत्म न कर पाऊँगा। उसमें अक्सर वाक्य लेखक ने बड़े भावनात्मक अन्दाज़ में लिखे हैं। भावना का आज की साइंसी और तकनीकी दुनिया में क्या काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं.... लेकिन मेरी आँखों से टप टप आँसू गिरे। वो जब बूचड़खाने के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो....

'मुझसे कहा।'

'फिक्र काहे की। मैं हूँ रुस्तम।'

अल्लाह अल्लाह अल्लाह।

लाइलाहा इल्लल्लाह, लाइलाहा इल्लल्लाह।

जाने कितनी बार वो मेरे दिल की गहराइयों में उतरा, झांका और झांक कर चला गया। कल सुबह ही कालेज जाना होगा। जो लड़के इस बार भी टेस्ट में फेल हुए हैं, उनसे ये कहना होगा कि वो अगली बार टेस्ट में फेल न हों। वर्ना दूसरी कक्षा में जा नहीं पायेंगे। मैं पुकारता रहा..... चीखता रहा..... चिल्लाता रहा.....

डाक्टर!..... अगली बार..... अगली बार.....

नक्कारखाने में तूती की आवाज़ की अहमियत ही क्या....

वो टैक्सी की सीट पर फिसल कर रह गया.... टांगे खिड़की से बाहर आ गई और टैक्सी भागी जा रही थी.....

सड़कों की खामोशी.... उदासी सब को समेट कर अपने साथ ले जा रही थी....

तन पर कपड़ा, ज़मीन की मिट्टी और.... अल्लाहु अकबर।

उजाले की किरणे पहाड़ों से छन छन कर आ रही थीं इन्द्रधनुष मेरी मुट्ठी में बन्द हो के रह गयी फिर आँसू क्यों?

मेरा हम शक्ल पेट्रोल पम्प के पास मेरी गाड़ी की खिड़की के पास खड़ा हो गया....

पगले.... तुमसे मिलने भी बहुत जल्द आ रहा हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नया हुक्मरान (नया शासक)

पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञों की खोज के दौरान हथौड़े की चोट से एक प्राचीन प्रतिलीपि उभर आई। उस प्रतिलीपि में कथाकार ने लिखा था।

हमारे शहर में सदियों से ये रस्म चली आ रही थी कि जब भी कोई अपने जीवन से नाता तोड़ देता तो ये माना जाता कि उस व्यक्ति ने अपने जीवन में कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जो उसके नेक होने की गवाही दे। इसलिए उसके शरीर को शहर से दूर एक चौराहे पर गिद्धों का पेट भरने के लिए रखा जाता। ताकि उसका शरीर गिद्धों की भूख मिटाकर उसके लिए कुछ नेकी पैदा कर सके। लेकिन अक्सर राहगीर दुर्गंध से बचने के लिए नाक और आँखों पर रुमाल रख लेते। शायद वो अपने अंजाम से शर्मिन्दा होते थे। या अपने अंजाम पर ईमान लाने से बचते थे। गिद्ध अपनी भूख मिटाकर आसमान की असीमता में खो जाते।

वो बूढ़ा कथाकार जो अपनी उम्र से भी ज़्यादा समय तक जीवित रहा। अपनी जवानी में खूब रोता होगा। बातचीत में मिठास भी होगी। लेकिन अब गिद्धों ने उसका मांस खा कर केवल हड्डियों का ढ़ांचा छोड़ा। गिद्ध उसके हड्डियों के ढांचे को चबा न सके।

हालांकि ऐसा होता आया है। इसके विपरीत वो चुपचाप जंगल की गहराइयों में खो गये फिर आनन फानन हड्डियों के ढांचे में आत्मा प्रवेश कर गयी। और वो चीखा, चिल्लाया.... मैं आ रहा हूँ। शहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज जब मामूली मुसीबतों में डूबा हुआ था। ज़िन्दों की बस्ती में एक मुर्दा लाश की बातों को भला कौन सुनने वाला था। जीवन की सौन्दर्यता में बदशगुनी के लिए कहाँ जगह है? ऐसे क्षणों में दूरअंदेशी को अपना रक्षक समझना पागलपन है और पागलपन समझा जाता है। इसलिए इंसान एक सुन्दर जानवर है।

वो मुर्दा लाश जब शहर के चौक पर पहुँची तो सारे शहर के निवासी अपने शवों का हिसाब दिए बगैर सो गये।

कथाकार ने आगे लिखा था कि उसके बाद उसके शहर मे सूरज नहीं निकला। शहर के निवासी गफलत की नींद सोते रहे और ये महसूस भी न कर सके कि इस रात की सुबह न होगी।

उन सब की सोच अपंग होकर रह गयी थी। इसलिए वो मुर्दा लाश अपने हाथ में चाबुक लिए गलियों, मुहल्लों में घूम रही थी और सब उसके सम्मान में सर झुकाते रहे। लेकिन अचानक दबी और दबाई गयी बस्ती में विद्रोह का झंडा ऊँचा हो गया। लेकिन विद्रोह क्रांति का रुप न धार सका।

..... और विद्रोहियों के सर काट दिये गये।

विद्रोहियों के इस आश्चर्य चकित कर देने वाले और सबक लेने वाले अंजाम पर मुर्दा लाश खुशी से उछलने, कूदने लगी और उसने ढोल पीट कर ये ऐलान किया।

'जो लोग मुझे मुर्दा और बेजान समझते हैं दरअसल वो खुद मुर्दा है और अपनी हीन भावना से छुटकारा नहीं पा सकते।

उस दिन शहर के सारे निवासी अपनी सच्चाई पर विचार करने लगे।

वो स्वयं को टटोलने लगे। लेकिन महफिल किसी नतीजे पर पहुँचने से पहले ही समाप्त कर दी गयी। आखरी मजलिस में लम्बी बहस के बाद ये बात तय पाई कि वो सब के सब मुर्दा हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदियाँ गुज़रने के बाद एक नौजवान ने उनसे कहा।

ये सच्चाई अपनी जगह पूर्ण है कि जीवित जीवित है और मुर्दा, मुर्दा। दिन की रोशनी रोशनी होती है और काली रात.... काली रात होती है.... 'जिन्दा लाश के इस शहर में उस नौजवान को बावला कहा गया। गालियाँ दी गयीं, जूतों की वर्षा की गई। पत्थरों से स्वागत किया गया। जिस मकान में उसने पनाह ली, उसको जलाया गया... जिस रास्ते पर वो चला.... उस रास्ते को अवरुद्ध कर दिया गया। लेकिन ज़िन्दादिल नौजवान के लिए यही बातें प्रसिद्धी का कारण बन गयीं। वो अपने मकसद पर डटा रहा। अंततः उस नौजवान को सलीब पर लटकाया गया.... गिद्ध उसकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे.... लेकिन इस बार वो लाश का मांस न खा सके।

फिर वो लाश अपनी शक्ति से खड़ी हो गयी..... क्रांति की तख्ती उसने गले में लटका ली। जो भी आया उसको रौंद कर चला गया। हड्डियों के ढांचे को हवा में उछाला और ज़मीन पर पटक दिया।

फिर वो हीरो बना। अपने उच्च विचारों को सुनहरे फ्रेम में हर मोड़ पर लटकाता रहा। वो शहर का नया शासक था.... शहर एक बार फिर काली रात में सफर करने लगा। ये कहते कहते कथाकार भी सो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्फी का कायदा (हानि का नियम)

उस शहर का चौक.....

कभी हरा! कभी पीला! अब लाल कहलाता है। अब उस चौक में एक घंटाघर का भी निर्माण किया गया था। उस दिन से एक हृष्ट पुष्ट नौजवान घंटाघर के सामने खड़ा होकर......

बड़ा बनने के लिए रास्ते के बड़े पत्थरों को हटाना होगा। पत्थरों को हटाने के लिए स्वयं को बलिदान के लिए तैयार करो। तुम लोगों के दिल बलिदान की भावना से तभी ओतप्रोत हो सकते हैं जब आँखें रखते हुए भी अंधे बन जाओगे.... आओ मेरे दोस्तो! हम अंधों की भांति एक ऐसी मंज़िल की ओर चलें जिन को अब तक कोई ज्ञात न कर सका हो।

उस शहर के आस पास जो पहाड़ों की श्रृंखलायें थीं वो बर्फ से ढंकी रहती थीं। लेकिन जब कभी उन पहाड़ों में हरियाली होती वहाँ की एक ऊँची चोटी पर अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति खड़ा होकर ऊँची आवाज़ में कहता।

मेरे देश के वासियो! मेरे दोस्तो! ये जो मेरा जूता है, ये जो मेरा पतलून है। ये जो मेरी कमीज़ है। ये जो मेरी टाई है। ये जो मेरा कोट है..... ये मेरे खुशहाल होने की कहानी नहीं है बल्कि मेरे दिमाग से उतरे हुए जंग की निशानी है।

मेरे प्यारो! अगर तुम्हें अपनी निर्धनता से, अपनी बेबसी से छुटकारा चाहिए तो अपने दिमागों में चढ़े हुए जंग को उतार लो.... मेरे तजुर्बे से फायदा उठाओ.... मंज़िल हासिल करने के लिए स्वयं में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलिदान की भावना पैदा करो।

पहाड़ों के दामन में वादी भी थी और इस वादी में एक शाही महल भी। शाही महल के शयनकक्ष में महाराजा मीठी नींद में थे। शयनकक्ष के द्वार पर प्रधानमंत्री खास मुलाकात के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। महाराज जब मीठी नींद से लौट आये तो उन्होंने अपनी सुन्दर दासियों से कहा!

आज मेरी तबियत क्यों दुखी है?

दासियों ने कहाः

महाराजः शायद हमारी सेवा में कोई कमी रही हो।

महाराजा ने बहुत कमज़ोर आवाज़ में कहा।

खैर.... प्रधानमंत्री को चरण स्पर्श की आज्ञा दी जाए।

फिर प्रधानमंत्री चरण स्पर्श के लिए उपस्थित हुए।

महाराज ने कहा।

क्या खबर लाए हो?

महाराजाधिराज.... वो सरफिरा हमारे नियंत्रण से बाहर हो गया है।"

क्यों..... प्रधानमंत्री..... क्यों?

वो उनकी सुरक्षा में चला गया है जिनके लाभ की वो यहाँ देख रेख कर रहा था।"

महाराज ने अपनी दम तोड़ती हुई चीख में कहाः "प्रधानमंत्री हमारी सेना.... हमारी सेना।"

लेकिन प्रधानमंत्री जो कुछ कहने वाले थे वो भी कम धमाकेदार नहीं था।

महाराजाधिराज.... वो तो सरफिरा है। पराया है.... आज नहीं कल हमारे चंगुल में होगा। लेकिन जब अपनों में ही काला भेड़िया होगा तब हालात पेचीदा ही नहीं मुश्किल भी....!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज ने अपने सिर पर रखे हुए ताज को मज़बूती से पकड़ा और कहने लगे।

अविश्वासपूर्ण.... अविश्वासपूर्ण!!!

उस दिन के बाद वादी की तारकोल सड़कों पर फौज गश्त करने लगी। उसी दिन एक मासूम बच्चे ने अपने पिता से पूछा!

बाबा बन्दूक क्या होती है?

"बन्दूक? बन्दूक में जब गोली रखी जाती है, और लुबलुबी दबाई जाती है तो उस गोली से आदमी मर जाता है...."

"लेकिन आदमी को क्यों मारा जाए?" बच्चे ने सवाल किया।

"इसलिए जब कभी आदमी दूसरे आदमी का दुश्मन बन जाता है.... तब.... मज़लूम आदमी हाथ में बन्दूक उठा लेता है।"

अब बच्चे ने ज़िद की....

"बाबा.... फिर मुझे बन्दूक चलाना सिखाओ।"

अब भी चौक में नौजवान समय की रफ्तार को नीचा दिखा रहा था। वह कह रहा था।

"हमारा मकसद केवल बड़ा होना ही नहीं बल्कि असल मकसद है.... बड़ा होकर बड़ा रहना होगा....!!

वादी में एक गोल मैदान भी था जिसकी भूमि ने न जाने कितनी क्रांतियों को अपने अन्दर छुपा रखा था। आज वहाँ सजाए गये चबूतरे के सामने एक कद्दावर व्यक्ति खड़ा था। उस का सर गंजा था.... नाक लम्बी थी..... कान खड़े थे.... वो दर्शकों से कहने लगा.....

देशवासियों आज मैं तुम लोगों से पहली बार बात कर रहा हूँ। आज मैं तुम लोगों के सामने पहली बार इसलिए उपस्थित हुआ हूँ.... कि तुमसे कहना चाहता हूँ कि आज न कोई मेरा सरपरस्त है न मैं किसी की अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ।"

उसी शाम वादी की एक खस्ताहाल झोंपड़ी में एक बूढ़ा आदमी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने नौजवान बेटे से पूछ रहा था।

"बेटा तुम्हारा निशाना कैसा है?"

नौजवान ने अपना सीना तान कर कहा।

"बाबा! रात के अंधेरे में उड़ते हुए पक्षी पर बंद आँखों से निशाना लगा सकता हूँ....।

बाप ने अपने हुक्के से तम्बाकू का लम्बा कश लेते हुए कहा।

"लेकिन देखना ये है कि तुम अपनी बंद आँखों से दुश्मन को भी पहचान पाओगे या....?

चौक पर जो मुख्य अस्पताल था, वहाँ से अधेड़ उम्र का सरफिरा आया। वो सावधान लग रहा था। उसके सम्मान में स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। उस मेले में उसके डाक्टर ने कहा।

"अपने स्वास्थ्य लाभ की खुशी में तुम अपने डाक्टर को क्या पेश कर रहे हो?"

सरफिरे ने कहा।

"डाक्टर कल मैं सफर पर जा रहा हूँ।"

वादी की एक खस्ताहाल झोंपड़ी में बेटा अपने बाप के हुक्के की चिलम में तम्बाकू भर रहा था, बूढे ने नौजवान से कहा।

"अब निशाना लगाने के लिए तैयार रहो।"

"बाबा.... क्या फिर खेतों में कोई खूंखार जानवर घुस आया है?"

"बेटे इंसान और जानवर में बहुत ही कम फर्क है....!"

नवजवान ने अपनी बंदूक हाथ में ली.... उसकी सफाई की.... फिर बंदूक की नाल में कारतूस डालने लगा।

आज चौक में हस्ट पुस्ट नौजवान भी नज़र नहीं आ रहा था। लेकिन चौक में गाड़ियों की कतार दर कतार खड़ी थी। गाड़ियों के इस काफिले में सबसे आगे वाली गाड़ी में नौजवान था। काफिले की रवानगी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के समय नौजवान ने चौक पर नज़र डालते हुए स्वयं से कहा।

"अलविदा.... अलविदा.... मैं आज बड़ा बनने और बड़ा रहने के बलिदान स्थल पर स्वयं को पेश करता हूँ...."

वादी का नौजवान..... लड़खड़ाते हुए कदमों के साथ अपनी खस्ताहाल झोंपड़ी के आंगन को पार करते हुए अपने बाप के कदमों पर गिर पड़ा। उसने अपने बाप का दामन..... पकड़ते हुए कमज़ोर आवाज़ में कहा।

"बाबा.... वो दस थे और मैं अकेला। नौ मेरे निशाने से बच न सके लेकिन दसवें ने मुझे अपनी गोली का निशाना बना लिया।"

बाप ने अपने जिगर के टुकड़े से लिपटते हुए कहा।

"लेकिन बेटा, अभी तो बहुत आगे जाना है।"

बाबा.... बाबा..... अल्लाह..... अल्लाह।

नौजवान ने अपने बाप की भुजाओं में दम तोड़ दिया।

बूढ़े ने नौजवान बेटे की लाश खुद दफनाई। फिर वो लम्बे लम्बे कदम बढ़ाता अपने घर के आंगन को पार करते हुए उस कमरे में पहुँचा जहाँ उसने दम तोड़ा था....

वहाँ अब भी उसके जवान बेटे की बन्दूक ज़मीन पर पड़ी हुई थी। उसने बन्दूक उठाते हुए कहा "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्दराज (अंकित)

संगमरमर में ढली हुई उस इमारत के सामने हज़ारों लोग सम्मान से सर झुकाते और अपने दिल की मुराद उस अनदेखी शक्ति से कहते जिसकी खोज करने में कोई लाभ नहीं और जिसका वजूद समझ से परे है।

वो दिनचर्या के मुताबिक गिरजाघर के सामने सर झुकाए खड़ था। उस दिन उसको महसूस हुआ कि किसी का कमज़ोर हाथ उसके सर पर था। उसने अपनी झुकी हुई निगाहें ऊपर उठाईं तो पादरी को खड़ा पाया। उसने सहमे हुए लहजे में पूछा।

"मुझसे क्या पाप हुआ है फादर।"

पादरी ने अपनी उंगली से आकाश की ओर इशारा करते हुए कहा "वहाँ से मालूम हुआ है कि तुम्हारा नाम मनुष्यों की सूची में अंकित है।"

वो आश्चर्य के हिमालय के नीचे दब गया और बोला।

"अविश्वसनीय"

पादरी ने गिरजाघर वापस जाते हुए कहा।

"तुम्हें इस गरिमापूर्ण पद की शुभकामना।"

इस सच्चाई से परिचित होने के बाद वो हालात पर काबू पाने की चेष्टा करता रहा। उसने फिर एक बार बुद्धिमत्ता पर विजय पाई। इसलिए उसके विचार ने बताया कि इस गौरवमय पद पर स्वयं को बनाए रखने के लिए कोई असाधारण कार्य करना होगा। ये विचार स्वयं में एक हताशपूर्ण कार्य था। वास्तव में वो इस गौरवमय पद पर प्रसन्न नहीं था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर एक दिन ऐसा हुआ.... कि अलिफ लैला से एक शहज़ादी चोरी झुपे भाग कर उसके घर के सामने फुटपाथ पर खड़ी हुई। फिर समय का सौदागर उस नाज़नीन को नीलाम करता रहा।

नाज़नीन को देखकर उसने कहा।

"मेरे पास रहने के लिए एक छोटा सा घर है.... पेट भरने के लिए दो वक्त की रोटी है, तन ढंकने के लिए कपड़ा है।"

नाज़नीन ने नौजवान के ये वाक्य बड़े गौर से गुने। फिर वो बिना कुछ कहे खामोशी के साथ उसके पीछे पीछे चल पड़ी। कल तक जो रास्ते उसके लिए खोये हुए थे, आज सामने आ गये।

नौजवान के घर की चीज़ें इधर उधर बिखरी पड़ी थीं....

नाज़नीन ने उस घर में कदम क्या रखा हर वस्तु क्रमवार नज़र आने लगी। नियम हर जगह दिखाई देने लगा। वो दोनों अपनी इस छोटी सी दुनिया में प्रेम का किला अपने कंधों पर उठाये हुए एक अंजानी मंज़िल की तरफ चल रहे थे। फिर बहुत दिनों बाद उन्हें एहसास हुआ... इस अंजान मंज़िल को कोई अच्छा सा नाम दे दिया जाए।

उस दिन बड़ी तेज बारिश हो रही थी.... बादल गरज रहे थे... और बिजलियाँ कड़क रही थीं। नाज़नीन इस भयानक माहौल से ऐसी सहम गयी कि नौजवान की छाती से चिपक गयी और आखिरकार बोल पड़ी।

"मुझे मेरी मंज़िल का नाम मिला।"

नवजवान ने उसकी जुल्फों को संवारते हुए कहा।

"पागल, देख..... फुटपाथ के उस पर.... वह बड़ी विशाल इमारत.... वहाँ ही तुम्हारी मंज़िल है।"

नाज़नीन की चीख उस भयानक माहौल में ऐसी गूंजी जैसे किसी सुनसान जंगल में अकेले घर पर बिजली गिर पड़ी हो।

"मुझे तुम्हारी इस बेमकसद खोज और सोच दोनों से इंकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है।"

नौजवान अपने उस जले हुए घर में धुआँ धुआँ हो रहा था। उसने अपने दिल पर मज़बूती से हाथ रखा। लेकिन.... धैर्य न रख सका।

"तुमने मेरी भावना को लहूलुहान किया... निकल जाओ.... यहाँ से निकल जाओ.... इतनी दूर हो जाओ कि फिर मुझे कभी नज़र न आना।"

नाज़नीन फिर उस दुनिया में वापस चली गयी, जहाँ से वो आई थी....

नवजवान ने जब अपने गुस्से पर काबू पाया। धैर्य की चादर दोबारा ओढ़ ली... तो आँखों से आंसुओं की लड़ी टूट पड़ी..... वो ये सोच सोच कर पागल हुआ जा रहा था कि वो कितना बड़ा बुज़दिल और अयोग्य निकला।

वो अपने नाम को मुजरिमों की सूची में साफ देख रहा था..... वो अपने आपको मानवता का खूनी समझ बैठा। अपने दिल की इस बेचैनी पर काबू पाने के लिए गिरजाघर के सामने घंटों सर झुकाए खड़ा रहा.... अचानक उसने अपने पैरों पर किसी के हाथों का स्पर्श महसूस किया। उसने बौखलाते हुए आँखों को खोला तो गिरजाघर का सबसे बड़ा पादरी उसके पाँव छू रहा था। वो अपने पाँव हटाते हुए बोल पड़ा....

"श्रीमान! ये क्या?"

लेकिन पादरी को मालूम हो गया था कि अब उसका नाम इन्सानों की सूची में लिखा जा चुका है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इरतेका का सानेहा (प्रगति की घटना)

सूरज सर पर आ गया। लेकिन वो बूढ़ा, कमज़ोर दाढ़ी वाला आदमी अब भी अपनी अपनी आँखें बंद किये हुए इबादत में डूबा हुआ था जैसे छः घंटे पहले था। वो दोनों पैरों में सर डाले हुए उसके सामने थे। उन दोनों का अन्दाज़ ऐसा था कि जैसे वो अपने फैसले की प्रतीक्षा कर रहे हों। माहौल के जादुई वातावरण ने उन दोनों को मूरत बना दिया था। उनमें एक लम्बा था उसकी आवाज़ में मिठास थी और बातचीत में जादू का असर था। वो स्वयं को शेरदिल कहता था। क्योंकि वो अपने हर गलत या सही निर्णय पर उसी प्रकार अडिग रहता था जैसे पत्थर की लकीर....

दूसरा नौजवान छोटा था.... वो स्वयं को अखाड़े का शेर नहीं समझता था। वो स्वयं को बुद्धिमान समझता था इसलिए यार दोस्तों ने उसका नाम दार्शनिक रखा था।

जब सूरज ढ़लने लगा.... आने वाले अंधेरे में कमज़ोर दाढ़ी वाले बूढ़े ने उन दोनों के सामने सिक्का फेंका। वो सिक्के पर झपट पड़े। शेर दिल फौलादी भुजायें, पहलवानी जिस्म और चट्टान की मज़बूती रखता था। इसलिए सिक्का उसने अपने हाथ में फौरन ले लिया। बाद में जब दिन के उजाले में उसको मालूम हुआ कि सिक्का खोटा है, उसने गुस्से में आकर बूढ़े दाढ़ी वाले व्यक्ति को बुरा भला कहा और क्रोध में सिक्का फेंकने ही वाला था कि दार्शनिक ने हाथ पकड़ लिया और कहाः

"कभी कभी बुरे समय में खोटा सिक्का भी काम आ जाता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तो किले तक पहुँचने के लिए दोनों ने अपनी मुहिम आरम्भ की।

हालांकि किले तक कैसे पहुँचा जाए और वहाँ किन किन कठिनाइयों भरे रास्ते से गुज़रना होगा, इससे वो दोनों बेखबर थे। वो अंजाम से भी बेखबर थे। मगर, हौसला और जोश उनकी रगों में खून बनकर दौड़ रहा था। शेरदिल ने खोटे सिक्के की तस्वीर बनाकर अपने गले में लटका ली।

फिर सफर में कुछ ऐसे मोड़ भी आये कि जहाँ इंसानों को भालों पर उछाला जा रहा था। शेरदिल की भावना आहत हुई। उससे ये दृश्य देखा न जा सका। उसने अपने जादुई व्यक्तव्य को दार्शनिक के वाक्यों से सजाया और संवारा फिर उस बस्ती में आफत ने सबको अपने साथ बहा डाला।

शेरदिल अपने कबीले का सरदार बनकर उभरा। लोगों के दिलों में शेरदिल के लिए जब सम्मान बढ़ने लगा.... तो ऊँची खानकाह में बैठा हुआ बूढ़ा पेशवा क्रोधित हो गया....

उसने अपनी सेना की सहायता से शेरदिल को गिरफ्तार करके खानकाह में अपने सामने पेश कराया.... बूढ़े पेशवा की उंगली हरकत में आ गयी तो शेरदिल को फांसी के तख्ते की ओर ले जाया गया। लेकिन खोटा सिक्का खोटा था। समय पर काम आ गया। न केवल शेरदिल की जान बचवाई बल्कि उनके सबसे बड़े देवता का पद भी दिलवा दिया।

कल तक वो एक मामूली आदमी था। जो गुमनामी की दुनिया में ऐसे भटक रहा था जैसे एक दीवाना अपनी दीवानगी के आलम में अकेले सफर कर रहा हो, लेकिन आज शासक के पद ने उसकी हर अदा में एक अनोखा निराला और दिलफरेब अंदाज़ भर दिया था। अब जब भी वो आईने के सामने अपने सर पर ताज रखता तो आईने से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहता....

"....मैं.... मेरा सर..... और मेरा ताज!"

अब नर्तकी का नृत्य शुरु हुआ। उसके बदन का अंग अंग थिरकने लगा। शासक उसकी हर अदा पर फिदा हो रहा था। लुभावनेपन ने जब दीवानगी का रंग बदलना शुरु किया तो दार्शनिक ने टोकते हुए कहा।

"उसे छुआ तो जा सकता है, लेकिन चखा नहीं जा सकता। नर्तकी तो नर्तकी थी। वो आमंत्रण को चोटी पर पहुँचाने की कला खूब जानती थी। वो अपना हर कदम नाप तोल कर आगे बढ़ा रही थी। पहले उसने अपनी काली काली आँखों को स्पर्श की थाली में सजा कर पेश करके शासक को सिंहासन से खड़ा किया लेकिन बूढ़ा पेशवा.... अपने पूर्वजों की परम्परा को तोड़ना नहीं चाहता था बल्कि उनको और मज़बूत करना चाहता था। इसलिए उसने शासक के सामने घुटने टेक कर अपनी छड़ी को थामते हुए बहुत ही विनम्र आवाज़ में कहा।

"हमारे अन्नदाता! हमें ऐसी कड़ी परीक्षा में न डालिए.... जहाँ हमारा धैर्य जवाब दे जाए। हमारा स्वाभिमान हमें ललकारता रहेगा। हमारे अन्नदाता! हमसे हमारी सन्तानों का बलिदान मांगिये... जायदाद मांगिये... आस्था मांगिये लेकिन ऐसा फैसला न सुनाइये जिससे प्रलय आ जाए।"

शेरदिल आईने के सामने अपने ताज की झालरों को क्रमवार कर रहा था लेकिन दार्शनिक... चिन्ता और परेशानी में डूबा हुआ था। शेरदिल दार्शनिक की कायरता पर मन ही मन मुस्कुरा रहा था। अब दार्शनिक से न रहा गया। उसने कहाः

"माना कि तुम देवता बने हुए हो, लेकिन तुम इंसान हो.... हज़ारों तमन्नायें हैं तुम्हारी। लेकिन ऐसी तमन्ना का इज़हार ही क्या करना जो हमारे वजूद को डस ले।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन नर्तकी के पांव अब भी ज़मीन पर थिरक रहे थे। न जाने वो सौन्दर्य का जादू था या नर्तकी की कला कि वो बुलन्दियों को छूने लगी। उसने अपने गुलाब जैसी पंखुड़ियों वाले होठों को नये नये तरीके से कई मोड़ दिये। शासक देखता रह गया। ऐसे होंठ केवल पूजने के लिए होते हैं.... चखने के लिए नहीं। लेकिन वो अपनी उभरती हुई तमन्नाओं को सुलाने की शक्ति कहाँ रखता था। इसलिए शासक अपने बालों से गुस्ताख मक्खी को हटाते हुए दार्शनिक से कहने लगाः

"हम तो गुलाम हैं परम्पराओं के। परम्पराओं को तोड़ना हमारे बस की बात नहीं। वर्षों से चला आ रहा है। खानदान की कल्पना, इस कल्पना से छुटकारा असम्भव है.... और परम्पराओं से इंकार करना असल में स्वयं को बर्बाद कर देना होगा।"

दार्शनिक पहली बार शेरदिल के सामने तन कर खड़ा हुआ। अपनी धीमी मगर निर्णय युक्त आवाज़ में कहने लगाः

"तलवारों की नोक कब परम्पराओं की यथास्थिती बनाए रखती हैं। बुद्धिमत्ता यही कहती है कि हमें बदलते हुए समय के तेवर पहचान लेने चाहिए... वर्ना बहते दरिया में आया हुआ तूफान अपने साथ सब कुछ बहा ले जाता है मेरे दोस्त।"

"दोस्त।"

शेर दिल के माथे पर नकारात्मक रेखायें उभर आईं....

"मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूँ मैं.... तुम्हारा शासक हूँ.... मेरा और तुम्हारा रिश्ता एक शासक और एक परामर्शदाता का है।"

दार्शनिक गहरी सोच में इसलिए नहीं पड़ा कि उसको दोस्ती के खो जाने का दुख था.... हाँ दोस्त के डूब जाने का गम ज़रुर था... ये घटना क्या कम थी कि जिस दोस्त को वो कठिनाइयों से बचाता रहा वो आज उसकी छाया भी न बन सका।

अब नर्तकी भी नृत्य में डूब कर स्वयं से बेखबर हो गयी। उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदन के सारे हिस्से थिरकने मटकने लगे। वो मस्ती को हर रंग में पेश करने लगी। ऐसा ही मंज़र होश को आग लगा देता है। शासक से अब रहा न गया। वो अपनी आवाज़ में पहले वाली गर्जना और जादू पैदा करने की कोशिश करने लगा जिसको वो अपनी सबसे कीमती वस्तु समझता था। लेकिन वो गर्जना अब कहाँ! वो मिठास अब कहाँ?

वो बूढ़े पेशवा से कहने लगाः

"पेशवा सुन! मैं नहीं चाहता.... कि मेरी मौत के बाद मेरी कौम सदियों खून के आँसू बहाती रहे। और शहर शहर गाँव गाँव, अपने देवता की खोज में भटकती रहे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि सदियों से चली आ रही परम्परा को तोड़ कर एक नई परम्परा का निर्माण करूँ.... इसलिए मैंने ये फैसला किया है कि जाने से पहले तुम्हारे लिए एक देवता छोड़ता जाऊँ.... इसलिए ये काम अब ज़रुरी हो जाता है कि हमारी एक रानी होनी चाहिए।"

पेशवा! जिस लड़की का हमने चुनाव किया है.... वो हमारी रानी बनेगी....!"

पेशवा के हाथ से लाठी गिर गयी। और वो अपनी कांपती हुई बूढ़ी आवाज़ में कहने लगाः

"लेकिन शहंशाह जबसे हमारी संस्कृति वजूद में आयी है, तब से देवताओं की शादियाँ आसमानों में होती चली आ रही हैं...."

शासक अपने सिंहासन पर खड़े होकर क्रोध में आकर कहने लगाः

"पेशवा.... मैं तुम्हारा शहंशाह हूँ और मेरा हर हुक्म मानना तुम्हारी आस्था है।"

पेशवा ने लड़की से कहाः

"बदकिस्मत! अब तुम्हारे बलिदान का समय आ गया है।"

उसका ये वाक्य सुनकर सारा महल खामोशी में डूब गया...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़की थरथरा उठी.... नर्तकी भी थक कर चूर हो चुकी थी।

बाहर सफेद घोड़े उस बग्गी को चला रहे थे। अतलस और कमख्वाब के कीमती कपड़ों को पहने हुए वो लड़की उस बग्गी से उतरी... जिसके सर पर शेरदिल रानी का ताज रखने वाला था। लोगों का एक बहुत बड़ा हुजूम अजीबो गरीब खामोशी में डूबा हुआ खड़ा था.... जैसे सबके होंठ सी दिये गये हों। इस अजीबो गरीब माहौल में केवल लड़की के सिसकने की आवाज़ आ रही थी।

शासक ने रानी के सर पर ताज रखते हुए कहा...

"हमने यानि समय के सबसे बड़े शासक ने तुम्हें शाही पद देकर तुम्हारे जीवन को अमर कर दिया। हमारी रानी...."

"दुआ दो उस क्षण को, जब हमारे दिल में तुम्हारे लिए ख्वाहिश पैदा हुई और तुम्हें एकान्त में प्रेम के लिए पसन्द कर लिया।"

वो लड़की अपने ही देश में एक बन्दी का जीवन गुज़ारने के लिए बलिदान की जा रही थी। वो भय और डर से.... और सहम से कांपने लगी। वो शासक जो उसका देवता था उसके लिए मृत्युदूत के रूप में था। वो उसकी आत्मा को अपने कब्ज़े में लेने के लिए आगे बढ़ रहा था। और वो शासक की फैली हुई भुजाओं के दायरे से स्वयं को बचाने की चेष्टा करती रही। जब वो उसमें बन्द हो गयी तो उसकी मृत्यु निश्चित हो गयी इसलिए उसने अपने मोतियों जैसे सफेद दांतों से तेज धार वाली तलवार का काम लिया.... और शासक का बायाँ कान काट लिया। शासक तकलीफ से चीख पड़ा। और उसे दिलबर की एक अदा समझकर अपनी बाहों में लेने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन जब कटे हुए कान से लाल खून की लकीर शासक के चेहरे पर फैलने लगी तो बूढ़ा पेशवा चीख पड़ा....

"लोगों! वो देवता नहीं है.... तुम जैसा एक मामूली तुच्छ इंसान है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शासक ने जब लोगों की भीड़ अपनी ओर आती देखी तो बौखला उठा। उसने रानी को एक ओर धकेल दिया और उनसे बचने के लिए भागने लगा। तो दार्शनिक ने उसे रोका और कहा:

"अब समय तुम्हारे हाथ में नहीं है। अब तुम समय के हाथ में हो.... लेकिन समय अब भी तुम्हारे हाथ में रहेगा। एक सच्चे शासक की भांति मृत्यु का स्वागत करो।"

कितने ही पृष्ठ काले हो गये!..... अब तो कहानी खत्म हुई। क्रांति आती है और सब को रौंद कर चली जाती है। लेकिन दार्शनिक अब भी बस्ती बस्ती, गाँव गाँव, शहर शहर उस व्यक्ति की तलाश में भटक रहा है जिसके सर पर ताज रखा जाए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधे अधूरे

जब हम अपने विचारों का खून करके ये समझ लेते हैं कि हमारे पास विचार करने को कुछ भी नहीं रहा.... फिर उस विचार को किस लिए विचार माना जाए कि आधी तस्वीर भी असल में पूरी तस्वीर है।

तस्वीर में पच्चीस रंग हों, फिर भी अधूरी हो? क्या ये दुखद नहीं और केवल आधी तस्वीर का नाम चिपकाए फिरे। एक बोझ है। और बोझ जब पहचान बन जाता है तो हम अपने सारे विचारों का खून कर देते हैं।

छुटकारे के हाथ काट कर फेंक दो। क्योंकि वो फौलादी हाथ भी हाथ न थे। अगर वो पूर्ण होते तो तस्वीर में केवल एक रंग होता।

जब वो बिस्तर में अपनी अधूरी तस्वीर छुपाता तो उसकी चेतना सो जाती और अचेतना जाग पड़ती। और उसको सारी दुनिया उल्टी नज़र आती जो केवल एक ही टांग पर खड़ी हर व्यक्ति के ऊपर आधी तस्वीर चिपकाती मालूम होती और वो! केवल वो पूर्ण नज़र आता।

ये कमी भी है, त्रुटि भी है और जुर्म भी। महान होने की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। अजगर धीरे धीरे उसकी ओर सरकता रहा और वो भागते भागते पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। नोकीले पत्थरों ने उसको लहूलुहान कर दिया। प्यास बहुत तेज़ थी और पानी का कहीं निशान भी न था। लहू तो बहते ही जम जाता है।

चमार के बेटे को बड़ी हंसी आई कि तस्वीर तो अधूरी है। ये हंसी कब अपने व्यक्तित्व का उपहास करती नज़र आये क्या मालूम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधूरी तस्वीर के पीछे कालजयी की कल्पना भी छुपी हो सकती है।

क्या ये घटना नहीं कि कभी कभी चित्रकार को अपने बनाए हुए चित्र पर खूब क्रोध आये। क्योंकि सम्भव है कि उसकी कल्पना से भी अधूरे चित्र के कुछ नाजुक कोने छुपे हों। कालजयी रचना सबकी नज़रों से छुपी रहती है। जो बहुत नज़दीक या बहुत दूर से अधूरी तस्वीर को देखे, अफसोस ही कर सकता है। और अधूरी तस्वीर चोट खाकर चकनाचूर हो जाती है। बिखर जाती है। और अपनी महरुमी में किसी को शामिल नहीं कर सकती। होंठों पर जो मुस्कान सदियों में उभरती है, उसको स्वयं हीं कत्ल भी कर देती है।

तस्वीर के नाजुक पहलू जब उभर कर सामने आते हैं तो तारीफों का एक न खत्म होने वाला पुल बांधा जाता है।

आर्ट गैलेरी से अजगर उसका पीछा कर रहा था। अजगर ने उसको अजीब सुनहरे सपनों में उलझा दिया। और वो अपने अधूरेपन की सच्चाई को भुलाता रहा। महल का भी निर्माण हुआ। खूबसूरत पार्क भी बनाया गया। रंगीन परदों की सरसराहट भी हल्के संगीत में घुलती गयी। सपनों में स्वर्ग की दशा भी सिमट आई लेकिन वो सब के सब शीशे के थे। अजगर की एक ही फुंकार से सब टूट फूट गये। शीशे चबाने की आवाज़ तक आ रही थी।

अचानक आधी तस्वीर में आँखें उभर आयीं। आँखों से दो आँसू गिरे और कैनवस में समा गये।

अजगर के जादुई रंग रात के काले रंग में ढलने लगे। और वो द्वीप जिसमें वो कैद था, जीवन से कट गया। वो दौड़ता रहा.... और अजगर उसकी शक्ति को निगलता रहा।

वो धुंधलकों में अपनी पहचान ढूंढने लगा। काफिले को अपने साथ ले जाना या अपने साथ ले जाने का हौसला पैदा करना बड़े दिल गुरदे का काम था। वो उसे दूर तक ले जाना चाहता था। बहुत दूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तक.... द्वीप की जो छाया उभरती रही, डूबती रही। वो उसको फांसी के फंदे पर खुदी हुई तलवार का निशाना बनाना चाहता था। लेकिन जिस काफिले का वो दुख दूर करता रहा जिस काफिले की एक एक खुशी के लिए वो सदियों रोता रहा। उस काफिले का हर व्यक्ति अजगर हो गया था। और उसके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा दुख ये था कि वो स्वयं भी अजगर बनना चाहता था।

आर्ट गैलेरी से पीछा करता हुआ अजगर अब भी बराबर फुंकारता जा रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरचियों का सफर

आप भी एक भले आदमी की तरह हम से हमदर्दी, मुहब्बत और दुख में सांत्वना देने वाले की भांति पेश आने की चेष्टा करेंगे। और हम आपको आपके इस आचरण के लिए शहर के चौराहे में सूली पर लटकाना चाहेंगे।

समय की अद्‌भुतता का कोई क्या करें कि जिस व्यक्ति को हम सूली पर लटकाना चाहते थे वही शहर के बड़े बाज़ार में अपने हाथ में चाबुक लिए हमारी पीठ पर अजीब से निशान बनाता हुआ हमसे बार बार कह रहा था था कि कविता का शीर्षक बतायें।

जादूगर के हाथ में जादुई चिराग हो और आप उसे पहचान न पायें तो इसमें जादूगर का क्या कुसूर है.... मातम कीजिए और हो सके तो अपनी आँखों को जेब में रखकर दुनिया को ये जताने की कोशिश कीजिए कि आपका वजूद अभी तक जादू में कैद है।

सब ने मिलजुल कर फैसला किया कि जो व्यक्ति शहर के चौराहे में शीशे का चिराग हाथ में लिए फिर रहा है उसको पत्थर मार मार कर मार दिया जाए क्योंकि सूरज अब तक सर पर है।

अक्ल के अंधों। तुम्हारे देखने की शक्ति के साथ साथ तुम्हारे बोलने की शक्ति भी छिन गई है। कब तक कविता को तस्वीर बना कर अपने गले में लटकाए फिरोगे। वो जो तुमने शहर के चौराहे पर सूली खड़ी कर दी है। और बार बार ऐलान करते फिर रहे हो कि खुदा को फांसी पर चढ़ाना है, तुम्हारी अल्प बुद्धि का सुबूत है। कि खुदा को अब भी अच्छाई और बुराई के इशारों से समेटना चाहते हो। कब तक अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्तित्व को कुचलते रहोगे?

इस आवाज़ का एक ही जवाब हो सकता था। सहनशीलता!

और अगर सहनशीलता लाल निशान को निगल जाए तो वही व्यक्ति जिसको कुचलने और दबाने की कोशिश की जाती है, आग उगलते पहाड़ के लावे की तरह फूट पड़ता है और शहर के बड़े बाज़ार में शीशे का चिराग हाथ में लिए चला जाता है।

"मुझे पहचान लो, मैं समय की आवाज़ हूँ, मैं तुम में हूँ और तुम मुझमें हो। मैं नये जन्मे हुए बच्चों की पवित्र आत्मा अपने अंदर रखता हूँ। मैं बर्फ की नर्मी रखता हूँ और ओस की नमी भी। सुबह की खुशबूदार हवा का पहला झोंका मैं ही हूँ। मैं सूरज की आंच भी हूँ और लू की तपिश भी, समय ने मेरे सीने में ज़हरीले नाग भर दिये हैं। और मैं उसी सीने के अन्दर आने वाले तूफान को दबाए हुए हूँ। मुझे अपना लो वर्ना वो बलायें जो तुम लोगों से दूर रही हैं तुमको आ घेरेंगी। क्योंकि मेरे हाथ भी कांप रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि मेरे हाथ पे रखा हुआ चिराग गिरकर टूट जाए।" उसका कहकहा बहुत भयानक था।

अपने शहर के कुछ लोग कहते हैं कि वो साधु था.... नहीं.... साधु है..... कल साधु था.... तो आज संदेष्टा होने का दावा भी कर सकता है। कल "मैं खुदा हूँ" भी कहे तो कोई बड़ी बात नहीं। सम्भव है आने वाले दिनों में वो केवल फलसफी होकर अपना परिचय कराये। क्योंकि वो बेरहम अपने व्यक्तित्व को स्वयं ही ये रुप दे रहा था। और खुद ही अपने व्यक्तित्व को कुचलता रहता था। लेकिन अपने शहर के लोग बड़े मासूम थे कि उसके हर रुप पर आस्था रखते हुए भी अपने एहसास की खुशहाली के लिए उस व्यक्ति को शहर के चौराहे में फांसी पर लटकाने को राज़ी हो गये। ऐसा शायद उस शहर के इतिहास में पहली बार हुआ था कि सब लोग एक ही राय पर चलें।

और जब उसको फांसी पर लटकाया गया तो आसमान से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजलियाँ कड़कीं। भयानक तूफ़ान उठे.... ज़मीन का सीना दहल गया। इमारतें गिर गयीं। लोग बहुत रोये खून के आँसू रोये। और इस अचानक की आपदा को रोकने का हर संभव प्रयास किया। लेकिन....

उस व्यक्ति को समय के चक्र ने खुदा बना दिया। शायद इसीलिए आज भी उस चौराहे से जहाँ उसे फांसी दी गयी थी, फूलों की खुश्बू आती है। और इंसान कितना कमज़ोर है कि अपने फायदे या नुक्सान के लिए बहरुपिये को खुदा की पदवी भी दे देता है। और अपने चेहरे के ऊपर खोल चढ़ाये रहता है कि उसकी पहचान असंभव हो। और जब हमारे नज़दीक होता है तो अपनी हमदर्दी, मुहब्बत और दुख में दुखी होने का कुछ इस प्रकार प्रदर्शन करता है कि बड़े प्यार से हमारे ज़ख्मों पर नमक छिड़कता है। और हमसे अपनी इस अदा के लिए प्रशंसा चाहता है। अब हमारी भी कमज़र्फी है कि हम इस हरकत को बड़ाई का वस्त्र पहनाते हुए भी इससे बच नहीं पाते। और ये दूसरी बात है कि आज जो भी व्यक्ति हमसे हमदर्दी या विनम्रता से मिलने की चेष्टा करे हम उसको फांसी पर चढ़ा देना चाहते हैं। क्योंकि कल ही की तो बात है कि जिस व्यक्ति की पूजा में वर्षों बिताए और उसे खुदा की पदवी दी। आज उसको कब्र से निकालना है और शहर के चौराहे में सूली पर लटकाना है क्योंकि हमारे पास कविता की बुद्धिमत्ता है। शीर्षक आ गया है और हमने कविता को तस्वीर बना दिया है।

और जब उस व्यक्ति को शहर के चौराहे में सूली पर लटकाया जाएगा तो शीशे का चिराग हमारे हाथ में होगा और हम अपने व्यक्तित्व को हर क्षण नये नये रुप देंगे।

क्या तुम हमें पहचान पाओगे!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंधा कुआँ

आज रात मुझे एक कुआँ खोदना है। आग लगने वाली है। मुझे ये मालूम है कि यहाँ सारी ज़मीन अंधी है। मगर मुझे विश्वास है कि ये कुआँ अंधा नहीं होगा।

थोड़ी देर पहले जब मैं बस अड्डे के पास खड़ा था, चलते फिरते पत्थरों के झुरमुट में स्वयं को बेबस पा रहा था। एक चमड़े का बैग एक संभ्रान्त व्यक्ति के हाथों में लटका हुआ नज़र आया था। उस पर 'यू' के दो शब्द लिखे थे। चमड़ा चमकदार था। बैग की बनावट सुन्दर थी। उसकी लाल टाई बार बार हवा में झूमते हुए उसकी गर्दन से लिपट जाती थी।

"एक रुपये से लखपति बन जाइये!" लाटरी टिकट बेचने वाले की आवाज़ मेरे कानों को बौखला कर रख देती थी।

और काले चमड़े का बैग बार बार मेरी नज़रों के सामने आता था। वो बैग छोटा नहीं था। अच्छा खासा बड़ा था। और सूट वाला अपने सावधान कदमों से सड़क पर चलते हुए एक पतली सुनसान गली में घुस गया। उसके पांव में कुछ चोट या मोच थी। वो बीच बीच में लंगड़ा कर चल रहा था।

मेरी लाटरी निकलने वाली थी।

वो एक पान वाले की दुकान के सामने रुक गया। शायद एक सिगरेट का डिब्बा और एक माचिस खरीदी। सिगरेट खुल गया। मेरे पास एक अधजला सिगरेट था लेकिन दिया सलाई न थी। उसने माचिस की डिबिया हवा में उछाली, जैसे उसकी बाकी तीलियाँ उसके लिए कोई अहमियत नहीं रखती थीं। मैं डिबिया पर काबिज़ हो गया। और तुड़े मुड़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिगरेट का धुआँ मेरी नस नस में खुश्बू भर गया।

भूखे पेट में चूहे दौड़ रहे थे। कल कोई न कोई हंगामा होना चाहिए वर्ना जान से हाथ धोना पड़ेगा। मगर वो चमड़े का बैग।

मैं समझता हूँ और मुझे विश्वास पर विश्वास है कि कल कोई हंगामा करने की आवश्यकता नहीं... हाँ.... अगर कोई दूसरा भूखा नहीं हुआ।

वो आदमी कहाँ गया?

वो.... दो चार कदम मुझसे आगे निकल गया.... बेवकूफ! मेरी नज़रों से ओझल न हो।

मुझे तुम्हारा ये चमड़े का बैग हिलाना बड़ा प्यारा लगता है। एक आवारा कुत्ता उसकी टांग से लिपट गया। वो कुत्ते से उलझ गया।

"कमबख्त छोड़ मेरा पीछा।"

उसकी भद्दी आवाज़ रात के अंधेर में उभरी। अब वो आवारा कुत्ता मेरे पास आकर खड़ा हुआ। लेकिन मेरे पास क्या था?

बेचारा मायूस मुँह लेकर चला गया। उसके पास चमड़े का बैग था और मेरे पास खाली जेबें.....

बार बार मुझे ये ख्याल आ रहा था कि तेज़ी से दौड़कर उसके हाथों से चमड़े का बैग छीन लूँ और गायब हो जाऊँ। मगर हिम्मत जवाब दे रही थी। वो बेवकूफ इस प्रकार आगे जा रहा था जैसे कोई भय नहीं था। जाने पहचाने रास्ते और माहौल.... रात के खौफनाक सन्नाटे में भी वो भिखारी लड़का उस गली के नुक्कड़ पर अपना राग अलाप रहा था।

"बाबू जी.... एक पैसा!"

उस सूट वाले व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गयी। उस का दायाँ हाथ जेब में गया फिर उसने मुस्कुराते हुए उस भिखारी लड़के से कहाः

"मेरी टाई चूम लो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वो भिखारी था, मजबूर था। उसके पेट में मेरी तरह चूहे दौड़ रहे थे। उसने टाई चूम ली। सूट वाले व्यक्ति ने उसके हाथ पर एक चवन्नी रख दी। वो लड़का दौड़ता हुआ एक गली में चला गया। अब हम दोनों एक गली में दाखिल हुए। वहाँ अंधेरा था। इतना अंधेरा कि व्यक्ति स्वयं को खोया हुआ महसूस करे।

वो आगे था, मैं पीछे था। फिर अचानक मेरे पांव के नीचे कुछ आ गया, वो एक पत्थर था। दूसरे क्षण उस व्यक्ति के फिसलने की आवाज़ आई। न जाने मेरे हाथों में वो पत्थर कब और कैसे आ गया। इससे पहले कि वो आदमी संभल जाए... मैं दौड़ते हुए उसके सर के पास पहुँच गया और... दूसरे ही क्षण मैंने उसके सर पर पूरी शक्ति से वो पत्थर मारा। उसकी चीख भी मुँह से न निकल सकी। मैंने खामोशी से उसकी लाश अपने कंधे पर रख ली और एक हाथ से चमड़े का बैग संभाल लिया। मेरा पूरा शरीर पसीने से सराबोर था। छोटी छोटी गलियों को पास करते हुए मैं वहाँ पहुँच गया जो मेरी मंज़िल थी.... नदी का भयावह शोर मेरे कानों के परदे फाड़ रहा था। मैं एक ऊँचे टीले पर खड़ा हो गया और उसकी लाश को पूरी शक्ति के साथ नदी में फेंक दिया.... लाश पानी के साथ बह गयी। यहाँ तक कि मेरी नज़रों से गायब हो गयी। अब मैंने इत्मिनान की सांस ली और दौड़ते हुए एक सरकारी बिजली के खंभे के पास पहुँच गया। मैंने कांपते हुए हाथों से बैग खोला। बैग खुलते ही मेरी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया...

वहाँ हरे हरे नोट नहीं थे... केवल कागज़ का एक पृष्ठ था। शायद ड्राफ्ट या चेक हो, इस ख्याल से मैंने तह किया हुआ कागज़ का पृष्ठ खोला.... वहां बड़े बड़े अक्षरों में कुछ शब्द लिखे थे.....

'आज की रात इस शहर को आग लग जाएगी।'

अब मुझे कुआँ खोदना है, मैं जानता हूँ सारी ज़मीन अंधी है। मगर मुझे पूरा भरोसा है कि वह कुआँ अंधा नहीं होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी का आसेब (कहानी का भूत)

फिर मेरा चेहरा मोम की भांति पिघल गया।

मैंने अपने चेहरे को हाथों में छिपा लिया। क्योंकि आईने ने पहचानने से इंकार किया था।

कहीं ये कहानी का भूत तो नहीं।

जीवन के लम्बे सफर में अचानक एक दिन उमरु अय्यार से मुलाकात हुई। इंडियन क्लासिक्स के मुख्यपात्र से हज़ार बातें हुई लेकिन कुछ भी पल्ले न पड़ा। अगर याद रहा तो केवल इतना कि एक दिन एक बादशाह अपने कमरे की धुंध में गायब हो रहा और चिल्लाता रहा, मैं कहाँ हूँ, मुझे तलाश करो। मैंने विश्वास न करते हुए कहाः

"कहीं ये कहानी का भूत तो नहीं।"

उसके मेकअप वाले चेहरे पर मैं कुछ भी न पढ़ सका।

मेरे हाथ में अलादीन का चिराग था। शायद वो किताब का अठारहवाँ पृष्ठ रहा होगा। लड़की के सौन्दर्य के सामने अलिफ लैलवी शहज़ादियों का सौन्दर्य फीका दिखता था। लेकिन लड़की के जीवन में सुख चैन नहीं था कि वो स्वयं को शहज़ादी समझे। लड़की गगन चुम्बी इमारतों में नर्म बिस्तरों पर सोने, अम्पाला गाड़ी में घूमने, एयर इंडिया के जहाज़ों में उड़ान भर कर स्विट्ज़रलैण्ड की वादियों में सैर करने, कीमती वस्त्र धारण करने, जीवन के बारे में दार्शनिकों की भांति सोचने का सपना देख सकती थी। लेकिन सपना..... सपना सच्चाई में बदल जाएगा, ये भी उसको विश्वास था। इसलिए एक दिन जब लड़के ने उससे कहाः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आओ हम दो एक हो जायें।"

तो लड़की ने व्यंगपूर्ण अन्दाज़ में होंठ सिकोड़ते हुए कहा।

"दर को दर ही रहने दो, हो सके तो छत की मरम्मत करा लो। वर्ना अबके सावन की बारिशों में मकान बह जाएगा।"

और किताब के पच्चीसवें पृष्ठ पर लिखा थाः

एक दिन बहुत ज़ोरों की गर्मी पड़ रही थी। और एक लड़की बस स्टैण्ड पर आधे घंटे से खड़ी बस की प्रतीक्षा कर रही थी। वो अपने रुमाल को पंखा बनाकर बार बार अपने मुंह के सामने करके शायद गर्मी का एहसास कम कर रही थी। इतने में शहर की अकेली रोल्स रायल्स गाड़ी वहाँ आकर रुक गयी। गाड़ी का दरवाज़ा खुल गया और वो निमंत्रण मिले बगैर गाड़ी में बैठ गयी। शायद उसको डर था कि कहीं कोई दूसरी लड़की न गाड़ी में बैठ जाए। गाड़ी चल पड़ी।

"तो हम दो से एक हो जायेंगे।" लड़की ने कहा।

ये गलतफहमी क्यो कर.... लड़के का लहजा तेज़ था न धीमा।

"गाड़ी जो आपने मेरे लिए खड़ी कर दी।" लड़की की आवाज़ में भरोसा था।

गाड़ी रुक गयी।

आपका मकान आ गया है। लड़के ने कहा।

"आइये अन्दर आइये" लड़की ने निमंत्रण दिया।

"लगता है अब के सावन की बारिशों में मकान बह जाएगा। मैं कैसे मकान में आ सकता हूँ" लड़का धीमी आवाज़ में बोला।

लड़की खामोश थी। लड़के ने कहकहा बिखेरते हुए कहाः

"ये लो, तीन हज़ार रुपये और छत की मरम्मत करवा लो" और ज़न से गाड़ी आगे बढ़ गयी।

लड़की ने एक नज़र आसमान की ओर, एक मकान की ओर और एक नोटों की ओर डाली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलादीन के चिराग से एक खत मिला। लिखा थाः

"दूसरों के मरने पर अफसोस वो करे जिसको खुद मरना न हो। और जो खुद पल पल मरे, और पल पल मरने के बाद ज़िन्दा हो, और अपने नये जीवन में अपनी पिछली मौत पर अफसोस करे। वो बुद्धिमत्ता के धोखे में है। हमारे पास क्या कुछ नहीं। क्या ये भी एक घटना नहीं कि हमारे पास सब कुछ होकर भी कुछ नहीं, हम तो पुरज़े हैं क्या कभी मालूम हो सका है।"

किताब?

अलादीन का चिराग?

चिराग से निकलने वाला खत?

और उमरु अय्यार?

कहीं ये सब कुछ कहानी का भूत तो नहीं?

उमरु अय्यार मुझ पर झपट क्यों पड़ा है?

क्यों?

मेरे हाथ खाली क्यों हैं?

मैं सड़क के अगले मोड़ पर अकेला क्यों खड़ा हूँ?

क्या मेरी कोई अलग पहचान नहीं?

कोई वजूद नहीं?

क्या मैं मशीन का पुरज़ा ही हूँ, जो घिस जाए तो फेंक दिया जाएगा। क्या मेरा पात्र ही मेरे लिए दुखद है?

मेरी पहचान क्यों नहीं? क्या इसलिए कि मैं भी भीड़ में से हूँ?

फिर मेरा चेहरा मोम की भांति पिघल गया।

मैंने अपने चेहरे को हाथों में छिपा लिया।

क्योंकि....

आईने ने मुझे पहचानने ही से इंकार कर दिया था!!!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुत परस्त (मूर्तिपूजक)

ब्रश ने बिना किसी क्रम के कागज़ पर रंग फैलाना शुरु किया। इसमें अनोखी आकृतियाँ कागज़ पर उभरने लगीं। वो सब मेरे पीछे दौड़ती रहीं। और मैं भागता रहा। लेकिन इस दौड़ में भी वो आवाज़ मेरा पीछा करने लगी।

"रज्जो! ज़रा बाज़ार से खट्टे आम लाना।"

मैं खुद से उलझ कर झुंझलाहट में चीख पड़ा।

"फ्री! मेरी लकीरें ठीक नहीं हो पाती।"

"बेवकूफ! लकीरों में न उलझ.... आम ला... आम ला...."

कोई जब रंगों की दुनिया में उलझ जाए तो इस उलझन में काले रंग का ढूंढ निकालना बड़े परिश्रम का काम है। लेकिन जब अपना ही होश विद्रोह करने पर तुला हो... फिर आदमी एक तमाशाई बन कर रह जाता है.... मेरा ब्रश केवल लाल रंग में डूबता रहा.... मैं भागता रहा लेकिन लाल रंग से छुटकारा असंभव था। ऐसे में एक आवाज़ बहुत दूर से आई।

"रज्जो! मैं जा रही हूँ.... रोना नहीं!"

मैं तो बस उन हाथों को देखता रहा जो लाल रंग में रंगे गये थे।

"फ्री! तुम्हारे हाथ कैसे खून में रंग गये।"

वो मुझे सीने से लगाये बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

रज्जो मैंने खुद अपने हाथों से अपना खून किया।

मैं परेशान हो उठा। मैंने कांपती हुई आवाज़ में कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"लेकिन फ्री! आज तो मैंने सात रेखायें क्रमवार खींची हैं।

"पगले!" फ्री ने मुझे चूमते हुए कहा।

"अब सात से बात नहीं बनने वाली। बीस होनी चाहिए। बीस!

मैं तो फिर आवाज़ की दुनिया में खोकर रह गया।

बीज की खोज करता रहा। फ्री की वो आवाज़ गीत में डूबी हुई थी।

मेरी खोज का विषय बन गयी....

हाँ.... एक सवाल बार बार दिमाग में उभरता था कि ये खोज क्यों और किस लिए.... और ऐसे अवसरों पर स्वयं से भी भय आने लगता था। तो मैं अपने ब्रश की पनाह में आ जाता। ब्रश आँख मिचोली खेलते खेलते किसी उतार चढ़ाव में उलझ जाता.... ये आँख मिचोली भी दिल्लगी की वजह बन गई....

वो कहने लगी....

रज्जो.... मेरे.... करीब आओ।"

".... फ्री... यहीं कहीं किसी कोने में छिपी हुई है।"

वो आखिरकार चीख पड़ी।

"फ्री.... फ्री! कब तक!"

ये सवाल मैं स्वयं से भी बहुत दिनों करता रहा लेकिन कोई भरोसे का जवाब न पा सका। मैं रेगिस्तान, रेगिस्तान भटकता रहा.... फिर एक क्षण ऐसा भी आया कि एहसास कांटे की भांति चुभता रहा.... मेरे पांव ज़ख्मी हो गये। मैं थक कर चूर हो गया।

अब तो मैंने अपने इरादों को पत्थर कर लिया था। मैं फ्री के बुने हुए जाल से आज़ादी हासिल करने के लिए तैयार हो बैठा। ये मेरी हिम्मत की आखरी सीमा थी।

फिर एक दिन तस्वीर बन कर मेरी तस्वीर की बात कुछ यूँ करने लगी जैसे मुझको मुझसे परिचित करा रही हो। उस तस्वीर पर ये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाक्य लिखा था.... कि मजनू लैला की खोज में थका हारा रेगिस्तान के बीच में खड़ा अपने चेहरे पर हाथ फेर रहा था.... झुर्रियाँ गिन रहा था।

वो कहने लगी:

'सत्यता के ऐसे अनमोल उदाहरण बहुत कम मिलते हैं!'

मैंने पास आकर कहा:

'लेकिन ऐसे क्षणों को कैद करने के लिए बहुत लम्बी यात्रा करके आया हूँ।"

जाने क्यों पहली बार शब्दों पर काबू नहीं रहा था.... जैसे कुछ कहते कहते कुछ और कह जाता.... बस मैं तो केवल पुकारता रहा.... मनी!.... मनी....!!

फिर मैं खुद सोचता रहा। और स्वयं ही अपनी सोच को क्रम देता रहा। लेकिन मनी मेरी तस्वीरों में खुद को छिपाती रही।

उस दिन उसने डूबते हुए सूरज की तस्वीर देखते हुए कहा।

"आपका हर पहलू लाजवाब है.... श्रीमान्! मैं आपकी कला के हर पहलू से बहुत रुचि रखती हूँ। मुझ नाचीज़ की ओर से ये तोहफा कुबूल कीजिए..."

मेरा हाथ पहली बार कांपा। उसने मेरे हाथ में चंदन की छड़ी थमा दी। फिर वो फ्री जिसको मनो मिट्टी के नीचे सुला के आया था... मेरे कानों में आकर कहने लगी:

"रज्जो.... ज़रा बाज़ार से कच्चे आम ला!!!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ा दरवाज़ा

बड़ी हवेली में रहने वाले सब के सब लोग लोहे के पुतले थे। बड़ी हवेली का मुख्य दरवाज़ा किसी पुराने किले से उठाकर खूंटी से जड़ा गया था। इस मज़बूत विशालकाय दरवाज़े ने जाने कितनी तोपों का बारुद अपने सीने में दबाके रखा था। पिछले दो दशकों से इस हवेली का दरवाज़ा नहीं खुला। लेकिन कहने वाले कहते हैं कि हवेली का दरवाज़ा जब भी खुला.... दरवाज़े में दबे हुए बारुद के फट जाने की आशंका पैदा हुई।

हवेली के रहने वाले कब जागते थे, कब सोते थे, कब रोते थे, कब हंसते थे! कब खांसते थे। इस बारे में भी कोई हिसाब न रख पाया। जब कबूतर बड़ी हवेली की छत से उड़ान के लिए बादलों के झुरमुट के पीछे भागने लगता तो कहने वाले कहते थे कि हवेली को सूरज की किरणों ने छू लिया।

इस हवेली के रोबदार व्यक्ति जो अधेड़ उम्र थे, कहा जाता था कि बड़ी हवेली के मालिक थे.... चंदन की बनी हुई छड़ी से तारकोल की सड़क पर टेकते हुए चले जाते थे। सफेद रंग का कुत्ता हवेली के मुख्य दरवाज़े पर बैठ जाता और वो हर राहगीर को संशयपूर्ण निगाहों से देखता।

हवेली का जीवन शुरु होने का बस यही एक प्रमाण था। बूढ़ा जब बहुत रात गये अपनी चंदन की छड़ी को टेकते हुए हवेली के अन्दर चला जाता तो बिल्ली की म्याऊँ म्याऊँ की आवाज़ आती। ये आवाज़ कभी सुनसान वीरान घर में बसी हुई किसी प्रेतात्मा की आवाज़ लगती थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस दिन सूरज ने स्वयं को बादलों में छुपा दिया फिर कुछ ही समय में बादलों ने आँसू बहाना शुरु कर दिया। यूँ तो न जाने कितनी बार सूरज ने बादलों में स्वयं को छुपा लेने की आँख मिचोली का खेल खेला.... लेकिन उस दिन आकाश दुखी था। आकाश और दुखी....!

दो दशक के समाप्त होने पर हवेली का दरवाज़ा खुल गया!!!

हवेली के पूर्वी दरवाज़े पर टंगी हुई तस्वीर में ताबूत में किसी के जनाज़े को आदमियों की भीड़ ले जा रही थी.... उन आदमियों में मैं भी एक था।

या अल्लाह.... यहाँ मैं कैसे! मैंने चौंकते हुए स्वयं को जगाने की चेष्टा की.... लेकिन वहाँ बूंदा बांदी हो रही थी....

आदमियों के इस काफिले में.... मैं क्या केवल अकेला इंसान था या कोई और भी था। अब वो रोबदार व्यक्तित्व कहाँ जाकर दफन हो गया.... आज वो ज़्यादा झुक गया। कमर में बल, आँखों में सफेदी आ गयी थी।

आदमियों के इस काफिले में केवल वही आवाज़ क्यों मेरे कानों तक पहुँची।

"एक ज़माना था साहब इनका। ज़माने की जान थी... क्या आवाज़ पाई थी। आवाज़ में क्या लोच था। कभी सुना है इनका गाना..."

जामा मस्जिद आ गयी.... जनाज़े की नमाज़ शुरु हुई।

अल्लाहु अकबर.... अल्लाहु अकबर.... अल्लाहु अकबर... जब हम उसको मनो मिट्टी के नीचे सुला आए तो मेरा पांव कीचड़ में फंस गया। मैंने पास वाली दरगाह शरीफ में कब्र की सोई हुई आत्मा के साथ लोहे के पिंजरे के पास खड़े होकर ताक झांक शुरु की।

वापसी का सफर बड़ा कठिन साबित हुआ।

मैंने बूढ़े से कहा....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"थक गये होंगे आप!"

"सलमा.... नीलोफर.... अंदर हैं।"

आठ साल की नीलोफर ने सलमा से कहा।

बाजी.... अम्मी कहाँ गयीं?

बूढ़ी आपा ने सलमा के आँसू पोंछते हुए नीलोफर से कहा।

"नीलोफर.... अब ये तुम्हारी बाजी नहीं अम्मी है।"

बड़ी देर तक खामोशी रही। हवेली का दरवाज़ा इसलिए नहीं खोला गया कि बाहर की रोशनी से उसमें रहने वालों की आँखें चुंधिया न जायें। हवेली में बड़ा शीशा भी था.... ज़री के तारों से बना हुआ गरारे का सूट भी था। ऐन इवनिंग इन पेरिस का इत्र भी था। लेकिन सलमा के बालों में चांदी आई थी... आँखें रोते रोते अंधी हो गयी थीं.... आँखें अब भी दरवाज़े पर लगी हुई थीं.....!

अब किसकी प्रतीक्षा थी..... तस्वीर अब भी वहीं टंगी हुई थी जहाँ पहले थी। आज पहली बार हवेली में मेला लगा हुआ था। शाही कोरमा पक रहा था। दस्तरख्वान बिछ रहे थे.... दौड़ने के सिवा किसी को कुछ सुझाई नहीं दे रहा था। कोई कुछ नहीं कर पा रहा था।

मेरा! यहाँ क्या काम? लेकिन वो मेरा रास्ता रोके हुए कहने लगाः

"जानते हो.... नीलोफर.... सलमा की बेटी है!"

शाही कोरमा बंट गया..... दस्तरख्वान अब उठाया जा रहा था। अब तो सब थक कर चूर हो गये थे.... चालीसवां हो गया। लोगों ने कुरआन पाठ के बाद आज्ञा ली।

और अब मैं....

कुत्ते की टांगों में बिल्ली ने अपना बदन छुपा लिया। कबूतर दिन भर की उड़ान के बाद बिल्ली के रेशमी जिस्म पर सो गया।

अब तो बड़ी हवेली का बड़ा दरवाज़ा भी बंद हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सो गये दास्तां कहते कहते

रात के अंधेरे में कब्रिस्तान के किनारे एक अकेली झोपड़ी से उठती हुई धुंये की रेखायें जीवन की अकेली निशानी थीं।

वो भाग रही थी फिर अचानक उस अकेली झोंपड़ी के सामने रुक गयी। वो कांप रही थी। सारा बदन पसीने से भीगा हुआ था। हाथों और पैरों में कंपकंपी थी। खुद को संयमित करके वो झोंपड़ी का दरवाज़ा पीटने लगी।

झोंपड़ी का दरवाज़ा एक काले भयानक चेहरे वाले भीमकाय व्यक्ति ने खोला। वो बेतहाशा चीखने लगी। फिर धीरे धीरे अपने आप पर काबू पा लिया।

काले व्यक्ति ने अपनी भयानक आवाज़ में कहाः

"क्या चाहिए।"

"वो सहमी आवाज़ में बोल पड़ी।"

"पनाह।"

काले ने झोंपड़ी के एक कोने की ओर इशारा किया।

वो कोने में ऐसे सिकुड़ कर बैठ गयी जैसे किसी ने दीवार पर तस्वीर टांग दी हो। काले ने उसके सामने एक अध जली रोटी और कुछ प्याज़ के टुकड़े डाले।

"खाओ।"

उसने अधजली रोटी और प्याज़ के टुकड़े खाये। और नींद की बाहों में चली गयी। और नींद ने सच्चाई के प्रदर्शन को दास्तान बना दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाचते नाचते जब भी उसके पांव दुखने लगते तब उस बूढ़े का कमज़ोर हाथ उसके सर पर होता। वो धन्यवाद की दृष्टि से बूढ़े के मुरझाए हुए चेहरे को देखती रह जाती।

फिर एक दिन शहज़ादा सलीम आ गया।

शहज़ादे ने कहाः

"अनारकली!.... तुम्हारे पांव नाचते नाचते ज़ख्मी हो गये हैं। मैं इन पर मरहम लगा दूँगा।"

अनारकली ने अविश्वास से पूछाः

"शहज़ादे कहीं ये सपना तो नहीं।"

बूढ़े ने अपना मुरझाया हुआ चेहरा और कमज़ोर हाथ दोनों को मिट्टी के अन्दर दफन किया। वो अचानक स्वयं को असुरक्षित समझने लगी लेकिन अपने दिल को विश्वास दिलाती रही कि उसका शहज़ादा उसके पास है। समय के चक्र ने शहज़ादे के चेहरे को बेनकाब कर दिया। उसने जिस सच्चाई को कायम रखने की कसम खायी थी उसी को चकनाचूर करना चाहता था। वो उसके काबू में न आई.... और भागते भागते कब्रिस्तान की अकेली झोंपड़ी में पनाह ले ली।

सुबह की किरणों ने उसे झोंपड़ी के सन्नाटे में वापस बुला लिया। उसने काले को अपने कंधे पर फावड़ा रखते हुए देखा तो सवाल किया।

"कहाँ जा रहे हो?"

एक और आया।" उसने सपाट आवाज़ में जवाब दिया।

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।"

"अभी" वो पूछ बैठा।

"हाँ अभी.... मैं....! इस झोंपड़ी के सन्नाटे में अकेली रह पाऊँगी।

"चलो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसने अपने कंधे पर टोकरी रखी। वो काले के पीछे पीछे चली। कब्रिस्तान की बहुत सी कब्रों को पार करते हुए वो ऐसी जगह ठहर गये जहाँ अभी कोई कब्र न थी। वो फावड़े से ज़मीन खोदने लगा। वो टोकरी से मिट्टी हटाने लगी।

एक लम्बी चौड़ी खाली कब्र बन गयी।

कब्र के तैयार होते ही चार व्यक्ति एक लाश को कंधों पर उठाए चले आये। उन्होंने लाश को ज़मीन पर रखा और उनमें से एक ने काले से कहा।

"लाश को ज़मीन के हवाले करो।"

काले ने सर के इशारे से हामी भरी। वो चारों वापस चले गये। काला लाश के सामने खड़ा हो गया। और हल्की आवाज़ में बोल पड़ा।

"खूबसूरत।"

लड़की की झुकी निगाह काले के वाक्य के साथ उस लाश के चेहरे पर पड़ी। उसके मुँह से दर्दनाक चीख निकल पड़ी।

"शहज़ादे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुँवारे शब्दों का द्वीप

ये जानते हुए भी कि शीशे के महल में रहना स्वयं को तीरों और भालों का निशाना बनाना होगा। मैंने फिर भी जीवन से कुछ हासिल करने की ठान ली।

अचानक सब एक सपने के असर में बदलता रहा। अब मैं रात के अंधेरे में स्वयं अपना पीछा करता रहता। अंधेरे में बार बार वो आवाज़ सुनाई देती।

"ये ढोंग किस लिए?"

"क्या मतलब?" मैं बोल पड़ता।

"सोच! अंजाम!"

जीवन के जो क्षण मैंने शान्ति के लिए रखे थे उनमें भी स्वयं को सोच विचार की कैद में बंद पाता हूँ। रात के अंधेरे में जब जब मेरी गहरी नींद टूट जाती है, मैं अपनी बंद मुट्ठी में एक द्वीप आश्रित पाता हूँ। और मैं इस द्वीप पर उन कुंवारे शब्दों की पहचान की खोज में लग जाता हूँ जो मुझमें समा कर भी मुझसे बहुत दूर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वहशी सईद धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले जम्मू कश्मीर के उस अनूठी शैली के कहानीकार हैं जिनकी कहानियाँ अपने विस्तृत परिदृश्यों के साथ जम्मू कश्मीर के पूरे इतिहास विशेषकर ८० के बाद की स्थिति और उसके कारणों जो कि इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हैं, उनको अपने विशेष अनुभवों और व्यक्तिगत सत्यता से जोड़ कर ऐसी लेखन शैली में प्रस्तुत करते हैं जो पाठक के दिमाग पर विशेष प्रकार के प्रभाव डालते हैं। ९० की दहाई के बाद उनकी दूसरी व्यस्तताओं ने साहित्यिक कार्यों पर इस प्रकार प्रभाव डाला कि उन्होंने लेखन तो जारी रखा लेकिन पत्रिकाओं में प्रकाशन हेतु भेजने के लिए समय न निकाल सके। अब जबकि उन्होंने इस ओर विशेष ध्यान दिया है, उनकी कहानियों के संकलन 'कुँवारे शब्दों का द्वीप' का प्रकाशन निश्चित रुप से हिन्दी साहित्यकारों और पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा और हिन्दी साहित्य में अपना एक विशेष स्थान बनायेगा।

जावेद अनवर
उपाध्यक्ष
प्रगतिशील लेखक संघ, उत्तर प्रदेश इकाई

Tahreek-e-Adab
Urdu Ashiana, 167, Afaq Khan ka Ahata
Manduadeeh Bazar, Varanasi-221103 (U.P.) INDIA
Cell: 0091 - 993-595-7330
e-mail: jaweanwar@gmail.com